व्याकरण कुसुम - 6

1. भाषा और व्याकरण

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. भाषा वह साधन है, जिसके द्‌वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने भाव-विचार दूसरे मनुष्यों तक पहुँचाता है तथा दूसरे मनुष्य के भाव-विचार ग्रहण करता है।

ख. भाषा के दो मुख्य रूप होते हैं–मौखिक तथा लिखित।
भाषा के जिस रूप द्‌वारा मनुष्य अपनी बात बोलकर दूसरों तक पहुँचाता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं।
उच्चरित ध्वनियों के लिखित रूप को लिखित भाषा कहते हैं।

ग. ''भाषा को लिखने के लिए प्रयोग होने वाले ध्वनि-चिह्नों को लिपि कहते हैं।''

भाषा	**लिपि**	**भाषा**	**लिपि**
हिंदी	देवनागरी	संस्कृत	देवनागरी
गुजराती	देवनागरी	उर्दू	फारसी
पंजाबी	गुरुमुखी	तमिल	तमिल

घ. 'व्याकरण' शब्द दो शब्दों को जोड़कर बनाया गया है–'वि + आकरण'। 'वि' का अर्थ है 'विकार' अथवा 'बुराई' तथा 'आकरण' का अर्थ है 'निकालना'। इस प्रकार भाषा के विकार को निकालकर उसे शुद्‌ध रूप देना ही व्याकरण का मुख्य कार्य है। हम जिस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, वह शुद्‌ध है या अशुद्‌ध इसका ज्ञान व्याकरण से होता है। इस प्रकार,
''व्याकरण वह ज्ञान है, जो हमें भाषा को शुद्‌ध रूप में बोलना, लिखना और पढ़ना सिखाता है।''

ङ. व्याकरण के तीन अंग होते हैं।
1. वर्ण विचार – व्याकरण के इस अंग में हम वर्णों के आकार, रूप, भेद आदि पर विचार करते हैं।
2. शब्द विचार – व्याकरण के इस भाग में हम शब्दों के रूप, बनावट, प्रयोग व भेद आदि पर विचार करते हैं।
3. वाक्य विचार – व्याकरण के इस अंग में हम वाक्यों के भेद व प्रयोग आदि की जानकारी प्राप्त करते हैं।

च. जब कोई भाषा किसी राष्ट्र के अधिकांश भू-भाग पर बोली व समझी जाती है, तो वह राष्ट्रभाषा बन जाती है। हिंदी, भारत की राष्ट्रभाषा है।

2. उपयुक्त शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

क. मनुष्यों — ख. बोली
ग. भाषा, लिपि — घ. व्याकरण
ङ. मौखिक, लिखित — च. लिखित

3. भारत के निम्नलिखित राज्यों में कौन-कौन सी भाषाएँ बोली जाती हैं–

क. हिंदी — ख. असमी — ग. बिहारी
घ. हिंदी — ङ. गुजराती — च. राजस्थानी

4. निम्नलिखित भाषाओं की लिपियों के नाम लिखिए–

क. देवनागरी — ख. फारसी — ग. गुरूमुखी
घ. रोमन — ङ. तमिल — च.

5. स्वयं करो।

6. क. ✗ — ख. ✓ — ग. ✓
घ. ✓ — ङ. ✗

2. वर्ण विचार

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. भाषा की सबसे छोटी इकाई अथवा ध्वनि, जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण या अक्षर कहलाती है।
1. स्वर — 2. व्यंजन

ख. उच्चारण के समय के आधार पर स्वरों के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–
क. ह्रस्व स्वर (Short Vowels)–ह्रस्व का अर्थ है 'छोटा' अथवा 'कम'। जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय अर्थात् कम समय लगता है; उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार हैं–अ, इ, उ, ऋ।
ख. दीर्घ स्वर (Long Vowels)–दीर्घ का अर्थ है 'बड़ा' या 'अधिक'। जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है; उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
ग. प्लुत स्वर (Longer Vowels)–जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। जैसे–ओ3म्, हे राऽऽम, सुनोऽऽ आदि।

ग. **ऊष्म व्यंजन (Sibilants)–** जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा मुख के विशेष भागों को स्पर्श करने के कारण गर्म हो जाती है, वे ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं–श्, ष्, स्, ह्।
संयुक्त व्यंजन– अलग-अलग व्यंजन जब आपस में जुड़कर संयुक्त ध्वनि उत्पन्न करते हैं, तो उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं; जैसे–

क्ष	क् + ष् + अ = क्ष	(क्षत्रिय)
ज्ञ	ज् + ञ् + अ = ज्ञ	(ज्ञान)
त्र	त् + र् + अ = त्र	(त्राण)
श्र	श् + र् + अ = श्र	(श्रवण)

घ. अयोगवाह वे वर्ण होते हैं जिनकी गिनती न तो शुद्‌ध स्वरों में होती हैं और न व्यंजनों में। स्वरों की तरह इनकी मात्राएँ लगती हैं; लेकिन इनका उच्चारण व्यंजन की तरह होता है। इसलिए इन्हें स्वर या व्यंजन किसी भी वर्ग में नहीं रखा जा सकता।

ङ. ह्रस्व स्वर (Short Vowels)–ह्रस्व का अर्थ है 'छोटा' अथवा 'कम'। जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय अर्थात् कम समय लगता है; उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार हैं–अ, इ, उ, ऋ।
दीर्घ स्वर (Long Vowels)–दीर्घ का अर्थ है 'बड़ा' या 'अधिक'। जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है; उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

2. व्यंजनों के साथ दी गई मात्राओं का प्रयोग करके एक-एक शब्द लिखिए–

क. गुल्लक — ख. ताला — ग. नीरज
घ. वृद्‌धा — ङ. रूपया — च. कृपा
छ. संसारज. — छोटा

3. निम्नलिखित शब्दों के लिए उचित वर्ण-विच्छेद चुनिए–

क. प् + र् + अ + क् + ऋ + त् + इ
ख. श् + ऋं + ग् + आ + र् + अ
ग. क् + र + इ + प् + आ + ल् + उ
घ. स् + उं + द् + अ + र् + अ

4. 'र' के अलग-अलग रूपों वाले तीन-तीन शब्द लिखिए–

'र' सामान्य (र)	-	राम, रमन, रौनक
'र' रेफ (र्‍)	-	सूर्य, धर्म, कर्म
'र' पदेन (‸)	-	ट्रक, ट्रेन, ट्राम
'र' पदेन (्र)	-	क्रम, चक्र, प्रसाद

5. निम्नलिखित शब्दों में अनुस्वार (ं) या अनुनासिक (ँ) की मात्रा लगाकर इन्हें पूरा कीजिए–

पतंग	शंख	तिरंगा	महँगाई
माँ	संदूक	आँधी	पलंग
आँख	गाँधी	हिंदी	मंगल
गंगा	चाँद	ऊँट	साँझ

3. उच्चारण और वर्तनी

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. किसी भाषा के वर्णों को मुख से बोलना उच्चारण कहलाता है।

ख. अशुद्ध उच्चारण के कारण वर्तनी में भी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

ग. संपूर्ण विश्व में हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसे जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा भी जाता है।

2. सही शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. पूजा ख. माह ग. ओर
घ. दीवाली ङ. शौक

3. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

शक्ति	रोटियाँ	पारलौकिक
कृपालु	प्रसाद	कवि
प्रातःकाल	क्रम	समुंदर

4. संधि

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. दो वर्णों अथवा ध्वनियों के मेल से जो परिवर्तन घटित होता है, उसे संधि कहते हैं।
विद्या + आलय = विद्यालय

ख. संधि के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–
1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

ग. जब पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन तथा दूसरे शब्द के आरंभ में कोई स्वर या व्यंजन हो तो उनके बीच के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं।
सच् + चरित्र = सच्चरित्र (व्यंजन + व्यंजन)
उत् + लास = उल्लास (व्यंजन + व्यंजन)

घ. गुण संधि–यदि अ या आ के आगे इ या ई, उ या ऊ और ऋ आए, तो इनके स्थान पर क्रमशः ए, ओ तथा अर् हो जाता हैं; जैसे–
अ + इ = ए ⇒ नर + इंद्र = नरेंद्र
अ + ई = ए ⇒ नर + ईश = नरेश

ङ. जब पहले शब्द के अंत में विसर्ग और दूसरे शब्द के आरंभ में स्वर या व्यंजन हो तो उन दोनों के बीच होने वाले मेल को विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे–
निः + मल = निर्मल
निः + रस = नीरस

2. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए–

महाशय	रविंद्र
मतानुसार	दिग्गज
मतेकय	महींद्र
नमस्ते	नरेश

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

लोक + उकित	ब्रह्म + ऋषि
मात्र + आदेश	सद् + गति
दुर् + बल	राम + आज्ञा
नारी + इच्छा	जगद + अंबा

4. निम्नलिखित संधि-विच्छेदों की संधि का सही विकल्प चुनिए–

क. प्रतीक्षा ख. गायक ग. निर्मल
घ. रवींद्र ङ. महेश

5. शब्द विचार

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।
विभिन्न आधारों पर हिंदी भाषा में शब्दों को चार वर्गों में बाँटा गया है–
1. उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर
2. रचना के आधार पर
3. अर्थ के आधार पर
4. प्रयोग के आधार पर

ख. उत्पत्ति अथवा स्रोत की दृष्टि से शब्द चार प्रकार के माने जाते हैं–
1. तत्सम शब्द 2. तद्भव शब्द
3. देशज शब्द 4. विदेशी शब्द

ग. रचना के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–
1. रूढ़ शब्द 2. यौगिक शब्द 3. योगरूढ़ शब्द

घ. अर्थ के आधार पर शब्दों को निम्नलिखित चार भागों में बाँटा गया है–
1. एकार्थी शब्द
2. अनेकार्थी शब्द
3. समानार्थी या पर्यायवाची शब्द
4. विपरीतार्थक या विलोम शब्द

ङ. **विकारी शब्द** (Variable Words)– वे शब्द, जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण विकार या परिवर्तन हो जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्दों के चार भेद हैं–
(i) संज्ञा–घोड़ा, घोड़े, घोड़ी
(ii) सर्वनाम–वह, वे, उसने, उसको, उसमें
(iii) विशेषण–अच्छा, अच्छी, अच्छे
(iv) क्रिया–है, हैं, ही, हूँ

अविकारी शब्द (Invariable Words)– जिन शब्दों के रूप में कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते है। इन्हें अव्यय भी कहा जाता है क्योंकि इनका व्यय अर्थात् परिवर्तन नहीं होता। अविकारी शब्दों के चार भेद हैं–
(i) क्रियाविशेषण – हाँ, नहीं, क्योंकि, कहाँ, वहाँ, धीरे
(ii) संबंधबोधक – में, पर, तक, समीप, ऊपर, के सामने
(iii) समुच्चयबोधक – और, तथा, किंतु, परंतु, लेकिन, कि
(iv) विस्मयादिबोधक – आह, अहा, अरे, ओह, छिः, शाबास

च. **पद** – शब्द जब वाक्य में प्रयोग होता है, तो उसे 'पद' कहते है। तब उसके रूप में लिंग, वचन, कारक या काल के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है।

2. निम्नलिखित शब्द रूढ़, यौगिक अथवा योगरूढ़ में से कौन-से हैं? लिखिए–

रूढ़	यौगिक
यौगिक	यौगिक
योगरूढ़	रूढ़
रूढ़	रूढ़
रूढ़	योगरूढ़

3. स्वयं करो।

4. निम्नलिखित विदेशी शब्दों के लिए हिंदी शब्द लिखिए–

रेल	चिकित्सक
मुखिया	धनी
विद्यालय	दुख
कमरा	गाड़ी

5. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

मयूर	कृषक
चर्म	रात्रि
निद्रा	कर्ण
आम्र	कूप

6. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

कौआ	प्रसन्नता
अर्द्ध	घर
काम	दोस्त
छोटा	नुकसान

6. शब्द-भंडार

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क.	सुत	बेटा	लड़का
ख.	सरोवर	जलाशय	तड़ाग
ग.	खग	विहग	परिंदा
घ.	भारती	शारदा	ईखरी
ङ.	धोड़ा	तुरंग	घोटक

2. निम्नलिखित शब्दों के सही विलोम शब्द चुनिए–

क. (ii) ख. (i) ग. (ii)
घ. (ii) ङ. (iii) च. (ii)

3. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए–

क. शिक्षक, भारी ख. दिन, आक्रमण
ग. निद्रावस्था, एक धातू घ. शंकर, एक पक्षी का नाम
ङ. उत्तर, खेती का यंत्र

4. स्वयं करो।

5. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन वाक्यांशों के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनिए–

क. (iii) ख. (iv) ग. (i)
घ. (ii) ङ. (ii)

6. निम्नलिखित वाक्यांशों और एक शब्द का मेल कीजिए–

क. (iii) ख. (v) ग. (i)
घ. (ii) ङ. (iv)

7.उपसर्ग

1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त सही उपसर्ग चुनिए–

क. (ii) ख. (iii) ग. (ii)
घ. (i) ङ. (iii)

2. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके तीन-तीन शब्द बनाइए–

अधमरा	अधकचरा	अधखिला
परनानी	परकोटा	परदादा
कमज़ोर	कमअकल	कमसमझ
बिनब्याहा	बिनदेखा	बिनसमझा
अनजान	अनपढ़	अनदेखा
अतिप्रिय	अतिरिक्त	अतिवृस्टि
बेशक	बेगुनाह	बेघर
आक्रमण	आयात	आशंका
प्रतिवादी	प्रतिध्वनि	प्रतिदिन
कुराज	कुपात्र	कुमार्ग

8. प्रत्यय

1. वे शब्दांश, जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय के दो भेद होते हैं–

1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त सही प्रत्यय चुनिए–

क. (ii) ख. (iii) ग. (i)
घ. (iv)

3. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

नवीन	महीन
भाग्यवान	ज्ञानवान
गयिका	लेखिका
सुनार	लुहार
पढ़ाकू	लड़ाकू
लेनदार	देनदार

4. निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर नए शब्दों की रचना कीजिए–

सोना + आर = सुनार	चढ़ + आई = चढ़ाई
पंडित + आइन = पंडिताइन	लेखक + इका = लेखिका
जादू + गर = जादूगर	भूल + अक्कड़ = भुलक्कड़

9. समास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल से नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।

ख. **समस्तपद –** समासयुक्त पद को समस्तपद कहते हैं। समास करते समय वाक्य में पद के बीच से विभक्ति चिह्न हटा देते हैं। विभक्ति रहित शब्दों को मिला देने से समस्तपद बनता है।

विग्रह करने पर समस्तपद के दो पद बनते हैं–पूर्वपद और उत्तरपद।

उदाहरण–

समस्तपद	पूर्वपद	उत्तरपद
युद्धभूमि	युद्ध	भूमि
रसोईघर	रसोई	घर

समास-विग्रह – जब समस्तपद को पूर्वपद और उत्तरपद में विभक्त करते हैं, तो यह प्रक्रिया समास-विग्रह कहलाती है। जैसे–

लोकप्रिय = लोक में प्रिय
गुणहीन = गुण से हीन
जेबखर्च = जेब के लिए खर्च

ग. समास के निम्नलिखित छह भेद होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास 4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास 6. बहुव्रीहि समास

घ. **बहुव्रीहि समास –** जब समास के दोनों पदो में से कोई भी पद प्रधान न होकर कोई तीसरा पद प्रधान होता है, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है।

ङ. **अव्ययीभाव समास –** इस समास का पहला पद अव्यय और दूसरा पद संज्ञा होता है। समास होने पर पूरा पद अव्यय के रूप में प्रयोग होता है।

2. निम्नलिखित समस्तपदों के उचित समास-विग्रह चुनिए–

क. (i) ख. (iii) ग. (iii)
घ. (iv) ङ. (iii)

3. निम्नलिखित पदों से समस्तपद बनाइए तथा समास का नाम भी लिखिए–

समस्तपद	समास
राजपुत्र	तत्पुरुष समास
समस्तपद	**समास**
घुड़दौड़	तत्पुरुष समास
पिता-पुत्र	द्वंद्वं समास
वनगमन	तत्पुरुष समास
नीलगाय	कर्मधारय समास
नीलकंठ	बहुव्रीहि समास

4. निम्नलिखित समस्तपदों के उचित समास-भेद छाँटिए–

क. (ii) ख. (iv) ग. (i)

घ. (i) ङ. (iii)

10. संज्ञा

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

ख. संज्ञा के तीन भेद होते हैं–व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान संज्ञा के दो भेद–द्रव्यवाचक और समूहवाचक संज्ञा भी मानते हैं।

ग. किसी के विशेष नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। वे शब्द जो किसी वर्ग अथवा जाति विशेष के नाम होते हैं, जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

घ. भाववाचक संज्ञा शब्द; जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से निर्मित होते हैं।

प्रमुख भाववाचक संज्ञाओं की रचना

जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक संज्ञा	***भाववाचक संज्ञा***
माता	मातृत्व
पिता	पितृत्व

सर्वनामों से भाववाचक संज्ञा बनाना

सर्वनाम	***भाववाचक संज्ञा***
मम	ममत्व
आप	आपा

विशेषणों से भाववाचक संज्ञा बनाना

विशेषण	***भाववाचक संज्ञा***
मधुर	मधुरता
कमजोर	कमजोरी

क्रियाओं से भाववाचक संज्ञा बनाना

क्रिया	***भाववाचक संज्ञा***
हँसना	हँसी
चलना	चाल

ङ. **भाववाचक संज्ञा –** जो शब्द किसी वस्तु, प्राणी या स्थान के गुण, दोष, अवस्था, कार्य या भाव का बोध कराएँ, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–

अवस्था	बचपन, यौवन, बुढ़ापा, गरीबी
गुण	सच्चाई, ईमानदारी, सुंदरता, वीरता
दोष	क्रोध, अहंकार, मूर्खता, कुटिलता
भाव	जलन, दुख, खुशी, प्रसन्नता
कार्य	पढ़ाई, लिखाई, दौड़, चढ़ाई

2. निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा भेद लिखिए–

क. समूहवाचक संज्ञा ख. भाववाचक संज्ञा

ग. व्यक्तिवाचक संज्ञा घ. जातिवाचक संज्ञा

ङ. व्यक्तिवाचक संज्ञा च. व्यक्तिवाचक संज्ञा

छ. द्रव्यवाचक संज्ञा ज. भाववाचक संज्ञा

3. निम्नलिखित शब्दों से बनी उचित भाववाचक संज्ञा चुनिए–

क. (iii) ख. (i) ग. (i)

घ. (iv) ङ. (ii)

4. निम्नलिखित विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

क. कमजोरी ख. लंबाई

ग. अच्छाई घ. सरलता

ङ. मिठाई च. चालाकी

11. लिंग

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द के रूप लिंग कहलाते हैं।

ख. लिंग के दो भेद होते हैं–पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग।

ग. शब्द का वह रूप, जिससे पुरुष जाति का बोध होता है, पुल्लिग कहलाता है। शब्द का वह रूप, जिससे स्त्री जाति का बोध होता है, स्त्रीलिंग कहलाता है।

घ. रत्नों के नाम पुल्लिंग होते हैं; जैसे– हीरा, पन्ना, नीलम, मोती आदि।

ङ. पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं–

1. अकारांत तत्सम शब्दों को आकारांत करके –

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
छात्र	छात्रा
प्रिय	प्रिया

2. तत्सम शब्दों के अंत में आए हुए 'अक' को 'इका' करके–

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
सेवक	सेविका
गायक	गायिका

3. कुछ शब्दों के अंत में 'ई' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बेटा	बेटी
पुत्र	पुत्री

2. निम्नलिखित शब्दों के पुल्लिंग रूप लिखिए–

स्वामी	धावक
हाथी	ससुर
चोटी	विद्वान
संपादक	आचार्य

3. निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों के लिए उचित स्त्रीलिंग शब्द चुनिए–

क. (iii) ख. (iii) ग. (ii)

घ. (iv) ङ. (ii)

4. रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर पुनः वाक्य लिखिए–

क. दर्जिन सम्राट के कपड़े सिलती है।

ख. फिल्म की नायिका महान अभिनेत्री थी।

ग. नौकरानी रसोईघर में थी।

घ. पंडिताइन जी पूजा कर रही हैं।

ङ. आज सभा में बहुत-सारी विदुषी उपस्थित थी।

12. वचन

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. शब्द का वह रूप, जिससे किसी संज्ञा का संख्या में एक अथवा एक से अधिक होने का पता चलता है, वचन कहलाता है।

वचन के दो भेद होते हैं–एकवचन और बहुवचन।

ख. 1. एकवचन – शब्द के जिस रूप से एक प्राणी या वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–लड़का, टीवी, गाय, चिड़िया, पंखा, पुस्तक, दरवाज़ा, कक्षा, कुत्ता आदि।

2. बहुवचन – शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों या वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–लड़के, टोपियाँ, गायें, चिड़ियाँ, पंखे, पुस्तकें, दरवाजे, कक्षाएँ, कुत्ते आदि।

ग. एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए निम्नलिखित नियम प्रयोग में लाए जाते हैं–

1. 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाकर–

एकवचन *बहुवचन*
कपड़ा कपड़े
नाला नाले

2. 'अ' के स्थान पर 'एँ' लगाकर–

एकवचन **बहुवचन**
बहन बहनें
रात रातें

2. निम्नलिखित शब्दों के एकवचन रूप लिखिए–

धातु चुहिया
छात्र रात्रि
तोता मणि
माता दिशा

3. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के उचित बहुवचन चुनिए–

क. (iii) ख. (iii) ग. (i)
घ. (iii) ङ. (iv)

4. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–

शेरों रातें
कमरें नदियाँ
आचार्यों माताएँ
लड़कियाँ मानवों
खटियाँ बातें
दिशाएँ लड़कें

13. कारक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

ख. **कर्म कारक (को) –** कर्ता द्वारा क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। जिसके लिए क्रिया की जाती है या जिसे कुछ दिया जाता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। जैसे–
छात्र परीक्षा के लिए पढ़ रहे हैं।
रोगी को औषधि दो।

ग. **करण कारक (से, के द्वारा)–**संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप, जिसकी सहायता से क्रिया संपन्न होती है, करण कारक कहलाता है। जैसे–
विक्रम टॉर्च से देख रहा है।
रवि साइकिल से स्कूल गया।

घ. **अपादान कारक (से)–**संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने, डरने, तुलना करने आदि भावों का पता चलता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे–
पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
पौधे से फूल मत तोड़ो।

ङ. कारक के आठ भेद होते हैं–कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन कारक।

2. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्दों के कारक बताइए–

क. कर्म कारक ख. कर्म कारक
ग. करण कारक घ. कर्म कारक
ङ. अधिकरण कारक च. अपादान कारक

3. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में दिए गए विकल्पों में से उचित परसर्ग छाँटकर लिखिए–

क. (i) ख. (iii) ग. (i)
घ. (i) ङ. (ii) च. (i)

4. तालिका में कारकों के कारक-चिह्न लिखिए–

ने को
से, के द्वारा को, के लिए
से का, की, के, रा, री, रे
में, पर हे!, ओ!, अरे!

14. सर्वनाम

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. "वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।" 'सर्वनाम' अर्थात् सबके लिए नाम। इनका प्रयोग लगभग सभी संज्ञा शब्दों के लिए किया जाता है।

ख. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष।

ग. **निश्चयवाचक सर्वनाम –**वे सर्वनाम शब्द, जिनसे किन्हीं निश्चित प्राणियों, व्यक्तियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–
वह आकाश है। वे सब हँस रहे हैं।
अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द, जिनसे किसी निश्चित प्राणी, व्यक्ति अथवा वस्तु का बोध नहीं होता, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–
बाहर कोई है। किसी ने मेरी मदद नहीं की।

घ. प्रश्नवाचक – कौन, कहाँ, किसके, क्या।
निजवाचक – खुद, आप, स्वयं, अपने आप

ङ. सर्वनाम में लिंग के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में दिए गए विकल्पों में से उचित सर्वनाम शब्द भरिए–

क. (iii) ख. (ii) ग. (iii)
घ. (iv) ङ. (ii)

3. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्द छाँटिए और उनके भेद लिखिए–

क. यह निश्चयवाचक सर्वनाम
ख. तू पुरुषवाचक सर्वनाम
ग. किसके लिए प्रश्नवाचक सर्वनाम
घ. अपना निजवाचक सर्वनाम
ङ. कोई अनिश्चयवाचक सर्वनाम
च. खुद निजवाचक सर्वनाम

4. निम्नलिखित वाक्यों का उचित सर्वनाम से मिलान कीजिए–

क. (iii) ख. (i) ग. (v)
घ. (ii) ङ. (iv)

5. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनामों के वचन बदलकर लिखिए–

क. तुम कौन हो?
ख. हम आ गए हैं।
ग. यह रो रहा है।
घ. आप सभी हमें पढ़ाओ।

15. विशेषण

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

ख. जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

ग. परिमाणवाचक विशेषण में संज्ञा अथवा सर्वनाम को निश्चित/अनिश्चित तौर पर नापा-तौला जा सकता है, जबकि

संख्यावाचक विशेषण में संज्ञा अथवा सर्वनाम की एक निश्चित/अनिश्चित गिनती की जा सकती है। एक विशेषण में वजन अथवा मात्रा महत्त्वपूर्ण होती है, तो दूसरे में संख्या; जैसे–

परिमाणवाचक विशेषण	***संख्यावाचक विशेषण***
कुछ दूध	कुछ केले
बहुत पानी	बहुत पुस्तकें
थोड़ी चीनी	थोड़े दर्शक

घ. सर्वनाम के तुरंत बाद संज्ञा आने पर वह सर्वनाम न रहकर सार्वनामिक विशेषण बन जाता है। उदाहरण देखिए–

सर्वनाम	***सार्वनामिक विशेषण***
वह गई।	वह लड़की गई।
उसे कुछ चाहिए।	उसे कुछ फल चाहिए।
वह मेरा भाई है।	वह लड़का मेरा भाई है।

ङ. जब विशेषण के द्वारा दो विशेष्यों की तुलना की जाती है तो विशेषण के रूप में परिवर्तन आ जाता है। विशेषण के इन परिवर्तित रूपों को ही उसकी अवस्था कहते हैं। विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

1. मूलावस्था – इसमें केवल एक व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान की विशेषता बताई जाती है; जैसे–सचिन तेंदुलकर प्रसिद्ध खिलाड़ी है।
2. उत्तरावस्था – इसमें एक व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान को दूसरे व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान से अधिक अथवा कम बताया जाता है; जैसे–सचिन तेंदुलकर, वीरेंद्र सहवाग से अधिक प्रसिद्ध है।
3. उत्तमावस्था – इसमें दो या दो से अधिक में तुलना करके एक को सबसे अधिक या सबसे कम बताया जाता है; जैसे–सचिन तेंदुलकर सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर उनके भेद लिखिए–

क.	बहुत	गुणवाचक विशेषण
ख.	दो	संख्यावाचक विशेषण
ग.	तेज	गुणवाचक विशेषण
घ.	एक गिलास	परिमाणवाचक विशेषण
ङ.	नारंगी	गुणवाचक विशेषण
च.	उसका	सार्वनामिक विशेषण

3. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए–

लड़ाई	विश्वास	बुद्धिमता	भूलक्कड़
मखमली	वही	आदरणीय	मासिक

4. निम्नलिखित विशेषणों की सही अवस्थाएँ विकल्पों में से चुनिए–

क. (ii) ख. (iii) ग. (iii)
घ. (ii) ङ. (ii)

16. क्रिया

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. जिन शब्दों से कार्य के होने अथवा किए जाने का बोध हो, वे क्रिया कहलाते हैं।

ख. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

ग. क्रिया के दो भेद होते हैं–1. सकर्मक क्रिया, 2. अकर्मक क्रिया।

घ. **सकर्मक क्रिया –** वाक्य में जिस क्रिया के साथ कर्म रहता है अथवा उसके होने की संभावना रहती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया कर्ता के द्वारा ही की जाती है, परंतु उसके कार्य का फल कर्म पर पड़ता है; जैसे–

कनिका गीत गाती है।	(यहाँ 'गाती है' क्रिया का फल 'गीत' अर्थात् कर्म पर पड़ता है)
रवि खीर खाता है।	(यहाँ 'खाता है' क्रिया का फल 'खीर' अर्थात् कर्म पर पड़ता है)
श्रीकृष्ण ने चक्र चलाया।	(यहाँ 'चलाया' क्रिया का फल 'चक्र' अर्थात् कर्म पर पड़ता है)

ङ. एककर्मक क्रिया में एक कर्म तथा द्विकर्मक क्रिया में दो कर्म होते हैं।

2. निम्नलिखित वाक्यों में से अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाएँ छाँटिए–

अकर्मक क्रियाएँ – उड़ेगी, हँसेगा, रो रहा है।
सकर्मक क्रियाएँ – लिखूँगा, खाएँगे, लाए, नहाता है, गाया, चले गये थे, खिली है।

3. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर क्रिया के सही भेद छाँटिए–

क. (i) ख. (iv) ग. (i)
घ. (iii) ङ. (ii)

17. काल और वाच्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. क्रिया के करने या होने के समय को काल कहते हैं।

ख. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए कार्य का प्रमुख विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

ग. वाच्य के तीन भेद हैं –
कर्त वाच्य कर्म वाच्य भाव वाच्य

घ. काल के तीन भेद हैं –
भूतकाल वर्तमान काल भविष्य काल

2. निम्नलिखित वाक्यों के काल बताइए–

क. वर्तमान काल ख. वर्तमान काल
ग. भविष्यत् काल घ. वर्तमान काल
ङ. भूतकाल

3. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य लिखिए–

क. कर्म वाच्य ख. कर्तृ वाच्य
ग. कर्तृ वाच्य घ. भाव वाच्य

18. अव्यय या अविकारी शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. वे शब्द जिन पर लिंग, वचन, काल आदि का प्रभाव न पड़ने के कारण उनका रूप परिवर्तन नहीं होता, वे अव्यय अथवा अविकारी शब्द कहलाते हैं।

ख. जो शब्द क्रिया के होने के काल, स्थान, परिमाण तथा रीति संबंधी विशेषता बताते हैं, वे क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे–
कछुआ धीरे चलता है।
वह जोर से हँसा।

ग. किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम का उसी वाक्य के अन्य संज्ञा अथवा सर्वनाम से संबंध बताने वाले शब्द संबंधबोधक कहलाते हैं।

घ. वे शब्द जिनसे हर्ष, शोक, भय, घृणा आदि भाव प्रकट हों, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

ङ. क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं–
1. कालवाचक क्रियाविशेषण
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
4. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

2. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाविशेषण छाँटिए व उनके प्रकार भी लिखिए–

	क्रियाविशेषण	भेद
क.	कल	कालवाचक क्रियाविशेषण

ख. बहुत — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
ग. सामने — स्थानवाचक क्रियाविशेषण
घ. कहाँ-कहाँ — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
ङ. जल्दी — रीतिवाचक क्रियाविशेषण

3. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित संबंधबोधक शब्द भरिए–

क. के बाहर ख. के सामने
ग. के साथ घ. के नीचे
ङ. के अंदर च. के ऊपर

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में उचित विस्मयादिबोधक शब्द लिखिए–

क. (ii) ख. (iii) ग. (iv)
घ. (iv) ङ. (i)

19. वाक्य विचार

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. शब्दों का सार्थक समूह वाक्य कहलाता है।

ख. वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं–1. उद्देश्य तथा 2. विधेय।

ग. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य।

घ. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं–विधिवाचक, आज्ञार्थक, प्रश्नवाचक, निषेधवाचक, विस्मयादिबोधक, संदेहवाचक, इच्छावाचक और संकेतवाचक वाक्य।

ङ. **सरल वाक्य –** जिस वाक्य में केवल एक क्रिया होती है, उसे सरल वाक्य कहते हैं; जैसे–

मनोज पानी पी रहा है।

इस वाक्य में 'पी रहा है' केवल एक-एक क्रिया है; अतः ये सरल वाक्य हैं।

मिश्र वाक्य – जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं; जैसे–

मालूम होता है कि आज बारिश आएगी।

प्रधान उपवाक्य–मालूम होता है।

आश्रित उपवाक्य–कि आज बारिश आएगी।

2. निम्नलिखित शब्द-समूहों से सार्थक वाक्य बनाइए–

क. छोटू के पापा सोच में डूब गए।
ख. बिना परिश्रम के सफलता नहीं मिलती।
ग. आकाश में चाँद निकल आया।
घ. सारी पुस्तकें अक्षरों से बनी हैं।
ङ. शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

3. अर्थ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के भेद लिखिए–

क. प्रश्नवाचक वाक्य
ख. विस्मयादिबोधक वाक्य
ग. इच्छावाचक वाक्य
घ. निषेधवाचक वाक्य
ङ. संकेतवाचक वाक्य

20. विराम-चिह्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. कथन के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

ख. जिन वाक्यों में प्रश्न पूछा जाता है, उनके अंत में प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

- तुम क्या काम करते हो?
- तुम्हें मेरे आने की सूचना कैसे मिली?

ग. पूर्णविराम चिह्न (।) –पूर्णविराम का अर्थ है 'पूरी तरह रुकना' या 'ठहरना'। सामान्यतः जहाँ वाक्य की गति अंतिम रूप ले ले, वहाँ पूर्णविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

मंदिर में भक्तों की भीड़ थी।

2. अल्पविराम चिह्न (,) –अल्पविराम चिह्न का प्रयोग उन स्थानों पर होता है, जहाँ बात तो पूरी नहीं होती, किंतु बात को स्पष्ट करने के लिए थोड़ा रुकना आवश्यक होता है; जैसे

संजय, अमित, राघव और विनोद आपस में अच्छे मित्र हैं।

घ. **इकहरा उद्धरण चिह्न** ('.....')–किसी कवि, लेखक आदि का उपनाम, पुस्तक आदि का शीर्षक लिखते समय इकहरा उद्धरण चिह्न लगाते हैं; जैसे–

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- महात्मा गांधी अर्थात् 'बापू'

दोहरा उद्धरण चिह्न (".....")–किसी का कथन यथावत् प्रस्तुत करने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग करते हैं; जैसे–

- मीना ने कहा, "सुरभि बीमार है।"
- नेताजी ने गरजकर कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

ङ. **लाघव चिह्न** (०)–लाघव चिह्न का प्रयोग शब्द को संक्षिप्त बनाने के लिए किया जाता है; जैसे–

- उत्तर प्रदेश – उ०प्र०
- कृपया पृष्ठ उलटिए – कृ०प०उ०

2. निम्नलिखित विराम-चिह्नों के सही नाम चुनिए–

क. (iii) ख. (ii) ग. (ii)
घ. (i) ङ. (iv)

3. निम्नलिखित वाक्यों को उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करके पुनः लिखिए–

क. अमित ने पूछा, "यह क्या हो गया रवि?"
ख. "पाप से घृणा करो, पापी से नही" – भगवान महावीर
ग. रवि, अनुज और विपिन बाजार गए हैं।
घ. क्या वह मर गया?
ङ. बहुत-बहुत शुक्रिया, अब मैं घर चलूँ।

4. निम्नलिखित अवतरण को उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करके पुनः लिखिए–

स्वंय करों।

21. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. वे वाक्यांश, जो अपने सामान्य अर्थ से हटकर विशेष अर्थ बताते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

ख. मुहावरे वाक्यांश होते हैं क्योकि इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं किया जा सकता।

ग. मुहावरे वाक्यांश होते हैं; इसलिए इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता। ये वाक्य के अंश रूप में ही प्रयोग किए जा सकते हैं। मुहावरे का ठीक अर्थ समझने के लिए उसके विशेष अर्थ को जानना आवश्यक है; जैसे 'कमर कसना' एक मुहावरा है, लेकिन इसका अर्थ कमर में रस्सी बाँधना नहीं है, वरन् तैयारी करना है।

लोकोक्ति का अर्थ है–लोक में प्रचलित उक्ति।

लोकोक्तियाँ जनसाधारण के अनुभवों, कहानी, घटना अथवा तथ्य पर आधरित होती हैं। लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं। इनका प्रयोग स्वतंत्र वाक्य के रूप में किया जा सकता है। इनका प्रयोग किसी विचार के समर्थन में होता है, जिससे कथन प्रभावशाली हो जाता है।

इस प्रकार,

घ. वह बात, जो लोक-आधारित और प्रसिद्ध हो, लोकोक्ति कहलाती है।

2. स्वयं करो।

3. स्वयं करो।

22. अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अपठित गद्यांश 1

1. ख	2. ग	3. घ
4. क	5. ख	

अपठित गद्यांश 2

1. ग	2. घ	3. घ
4. ग	5. ग	

23. अनुच्छेद लेखन – स्वयं करो।

24. कहानी लेखन – स्वयं करो।

25. पत्र लेखन – स्वयं करो।

26. निबंध लेखन – स्वयं करो।

27. संवाद लेखन – स्वयं करो।

व्याकरण कुसुम - 7

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1 वह साधन, जिसके द्वारा हम लिखकर अथवा बोलकर अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं, तथा दूसरे पढ़कर अथवा सुनकर विचारों को समझ सकते हैं, भाषा कहलाता है।

2. भाषा के लिखित रूप द्वारा जानकारी को सँजोकर रखा जा सकता है। पत्र, लेख, पुस्तक, कहानी, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं आदि में भाषा का इसी रूप में प्रयोग किया जाता है।

3. बच्चा जिस समाज में पलता-बढ़ता है, उसी की भाषा वह बोलने लगता है। उस भाषा को उसकी मातृभाषा कहा जाता है। किसी हिंदी भाषी परिवार में जन्म लेने वाला बालक प्रारंभ से ही हिंदी भाषा के परिवेश में रहकर हिंदी भाषा ही सीख सकता है। यही उसकी मातृभाषा होगी।

4. मुख से निकली ध्वनियों को लिखने की विधि या चिह्न को लिपि कहते हैं।

5. व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके द्वारा भाषा के बोलने, लिखने व पढ़ने के नियमों की जानकारी मिलती है।
व्याकरण के ज्ञान के बिना किसी भी भाषा के शुद्ध रूप व प्रयोग को नहीं समझा जा सकता। व्याकरण में भाषा के वर्ण, शब्द, पद तथा वाक्य पर विचार किया जाता है।

6. व्याकरण के चार अंग होते हैं–
   1. वर्ण-विचार– इसके अंतर्गत वर्ण, वर्णमाला, वर्णों के भेद, उनके उच्चारण तथा संयोग की रीति आदि पर विचार किया जाता है।
   2. शब्द-विचार– इसके अंतर्गत शब्दों के रूप, भेद, महत्त्व, उनकी उत्पत्ति और रूप आदि पर विचार किया जाता है।
   3. वाक्य-विचार– इसके अंतर्गत वाक्य-भेद, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-रचना तथा विराम-चिह्न आदि पर विचार किया जाता है।
   4. रूप-विचार– इसके अंतर्गत शब्दों के रूप-परिवर्तन, उनकी रचना और भेद तथा उनके कार्य का अध्ययन किया जाता है।

ख. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित विकल्पों द्वारा कीजिए–

1. (ii)	2. (iv)	3. (iii)
4. (i)	5. (iii)	

ग. निम्नलिखित स्थितियों में भाषा का कौन-सा रूप प्रयोग किया जाता है–

1. मौखिक भाषा	2. मौखिक भाषा
3. लिखित भाषा	4. लिखित भाषा
5. लिखित भाषा	

घ. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाइए–

1. ✓	2. ✗	3. ✓
4. ✓	5. ✓	6. ✓

2. वर्ण–विचार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मुख से बोली गई ध्वनि को लिखने के लिए निर्धारित चिह्न को वर्ण कहते हैं।

2. स्वरों के उच्चारण में किसी अन्य ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है।
व्यंजनों के उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता की आवश्यकता होती है।

3. क. अनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर वर्ण का उच्चारण करते समय हवा मुख एवं नासिका दोनों से निकले तो उस वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है और इन स्वरों को अनुनासिक स्वर कहते हैं, जैसे–दाँत, अँगूठी, चाँद, आँख आदि।
जिन स्वरों की मात्राएँ शिरोरेखा के ऊपर लगती हैं, वहाँ (ँ) के स्थान पर (ं) बिंदु का प्रयोग किया जाता है; जैसे– मैँ = मैं, नहीँ = नहीं।
   ख. अनुस्वार – इसका चिह्न शिरोरेखा के ऊपर बिंदु (ं) के रूप में लगाया जाता है। इसका उच्चारण करते समय हवा नाक से बाहर निकलती है; जैसे–हंस, कंघा, पंख, रंग आदि।

4. संयुक्त व्यंजनों की रचना दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से होती है। प्रायः दो व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन के रूप में व्यवहार में लाया जाता है। ये संख्या में चार हैं–

क्ष	=	क् + ष् + अ	(रक्षक)
ज्ञ	=	ज् + ञ् + अ	(ज्ञाता)
त्र	=	त् + र् + अ	(सर्वत्र)
श्र	=	श् + र् + अ	(श्रवण)

5. शब्दों के वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। जैसे–
किताब = क् + इ + त् + आ + ब् + अ
सैनिक = स् + ऐ + न् + इ + क् + अ

ख. निम्नलिखित शब्दों का सही वर्ण-विच्छेद चुनिए–

1. (iii)	2. (i)	3. (iv)
4. (ii)	5. (ii)	

ग. निम्नलिखित वर्णों को मिलाकर, शब्द बनाकर लिखिए–

1. कोयल	2. त्रिकोण	3. कृपालु
4. रजत	5. मौलिक	

घ. निम्नलिखित वर्णों का प्रयोग करके चार-चार शब्द लिखिए–

संयुक्त व्यंजन – रक्षक, क्षत्रिय, कक्षा, ज्ञाता
द्वित्व व्यंजन – बच्चा, कच्चा, सच्चा, छज्जा
अनुनासिक – चाँद, आँख, अँगूठी, दाँत

विसर्ग	–	प्रातः, पुनः, अतः, अंततः
प्लुत स्वर	–	सुनोऽऽ, राऽऽम, ओऽऽम।

3. उच्चारण और वर्तनी

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मुख से अक्षरों का बोलना उच्चारण कहलाता है।
2. सभी वर्णों के लिए मुख में उच्चारण स्थान होते हैं। यदि वर्णों का उच्चारण शुद्ध न किया जाए तो लिखने में भी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।
3. भाषा संबंधी अशुद्धियाँ रोकने के लिए हमें शुद्ध उच्चारण करना चाहिए। क्योंकि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, अतः इसे जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा भी जाता है।

ख. उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. ईर्ष्या 2. पत्नी 3. आधार
4. पड़ोस 5. निरपराध 6. छः

ग. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

अभिमान	हुए
प्रतीज्ञा	कसौटी
आजीवन	लक्ष्मण
वधू	अंश
ब्रज	पीड़ा
अहिल्या	परीक्षा

4. संधि

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं।
संधि के द्वारा एक बने शब्दो को अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे–
नमस्ते = नमः + ते महेश = महा + ईश
रेखांकन = रेखा + अंकन शिवालय = शिवा + आलय
2. संधि के तीन भेद होते हैं–
❀ स्वर संधि ❀ व्यंजन संधि ❀ विसर्ग संधि
3. स्वर संधि में दो स्वरों के बीच संधि होती है।
व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, वह व्यंजन संधि कहलाता है।
4. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं-दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि और अयादि संधि।
5. ❀ यदि किसी शब्द के अंत में त् आया हो और उसके बाद च या छ हो तो त् बदलकर च् हो जाता है; जैसे–
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
उत् + चारण = उच्चारण
❀ यदि पहले शब्द के अंत में त् और दूसरे शब्द के आरंभ में स हो तो त् ज्यों-का-त्यों बना रहता है; जैसे–
उत् + सर्ग= उत्सर्ग
सत् + साहस = सत्साहस

ख. निम्नलिखित संधि-विच्छेदों की उचित संधि चुनिए–

1. (ii) 2. (iii) 3. (ii)
4. (iii) 5. (ii) 6. (ii)

ग. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

1. योग + अभ्यास
2. नर + ईश
3. महा + औषधि
4. अति + आचार
5. विद्या + आलय
6. धर्म + इंद्र
7. सदा + एवं
8. निः + रोग
9. प्रातः + काल
10. सन् + मार्ग

घ. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

1. मूल्यांकन
2. राजेश
3. सज्जन
4. परमोज
5. स्वागत
6. मातृच्छा
7. भानूदय
8. नद्यर्पण
9. परोपकार
10. सद्भावना
11. उच्चारण
12. यशोगान

ङ. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

भावन	गणेश
नयन	योगेश
शयन	सुरेश
पवन	नरेश

5. शब्द-विचार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. वर्णों का सार्थक समूह, शब्द कहलाता है। वर्णों के सार्थक समूह को वाक्य में प्रयुक्त होने पर पद कहते हैं।
2. **रूढ़ शब्द –** जो शब्द किसी निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है, जैसे–घोड़ा, रोटी, लोटा, कमल, हाथी आदि। ये शब्द किन्हीं शब्दों के योग से नहीं बनते, इसलिए इनके खंड भी नहीं किए जा सकते। खंड करने पर इनका कोई अर्थ ही नहीं रहता; जैसे–
घोड़ा = घो + ड़ा, जल = ज + ल आदि।
योगरूढ़ शब्द – ऐसे यौगिक शब्द, जिनका प्रयोग परंपरा से किसी विशेष अर्थ में किया जाता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे–
दशानन = दश + आनन – दस मुख वाला (रावण के लिए रूढ़)
जलज = जल + ज – जल में जन्म लेने वाला (कमल के लिए रूढ़)
3. वे शब्द, जो संस्कृत से हिंदी में ज्यों-के-त्यों आए हैं तथा उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं जिस रूप में संस्कृत में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे–कृष्ण, कवि, गुरु, आचार्य आदि शब्द संस्कृत व हिंदी में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं।
4. प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं-विकारी शब्द और अविकारी शब्द।
5. **विकारी शब्द –** जिन शब्दों में लिंग वचन, पुरुष या काल के अनुसार विकार या परिवर्तन आ जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–
(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम
(iii) क्रिया (iv) विशेषण
अविकारी शब्द – जिन शब्दों के रूप में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता और जो हमेशा मूल रूप में ही वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें अविकारी शब्द (अव्यय) कहते हैं। अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–
(i) क्रियाविशेषण (ii) संबंधबोधक
(iii) समुच्चयबोधक (iv) विस्मयादिबोधक

ख. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित विकल्पों से कीजिए–

1. (i) 2. (ii) 3. (iv)
4. (ii) 5. (iii)

ग. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द अलग-अलग कीजिए–

तत्सम शब्द – गृह, मयूर, कर्ण, मस्तक, स्वर्ण, घट।

तद्भव शब्द – साँप, घर, आग, अँगूठा।
देशज शब्द – झुग्गी, पगड़ी, खिड़की, डिबिया, गरदन, शहद।
विदेशी शब्द – कार, आज, इंजीनियर, कूपन, जूता।

घ. नीचे दिए गए शब्दों के आगे रूढ़, यौगिक या योगरूढ़ में से उनका प्रकार लिखिए।

यौगिक	रूढ़
रूढ़	योगरूढ़
यौगिक	रूढ़
यौगिक	योगरूढ़
योगरूढ़	रूढ़

ङ. तीन-तीन शब्द लिखिए–

कंपनी	डायरी	नर्स
इशारा	औरत	नकल
आसमान	अनार	चपरासी
गमला	गोदाम	फीता
तोप	लाश	चेचक

6. शब्द भंडार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द होते हैं।
2. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द समानार्थी अथवा पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
3. जो शब्द सुनने में समान लगते हैं किंतु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, उन्हें श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।
4. एक अर्थ प्रकट करने वाले शब्द एकार्थी शब्द कहलाते हैं।
   जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहा जाता है।
5. हिंदी में ऐसे अनेक शब्द हैं जो विभिन्न समूहों के लिए प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे शब्दों को समूहवाची शब्द कहते हैं। किंतु किसी एक समूहवाची शब्द का प्रयोग केवल एक समूह-विशेष के लिए ही होता है।

ख. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

मानव	आदमी	नर
भूमि	भू	धरती
वायु	हवा	समीर
बजरंगबली	पवनपुत्र	महावीर
पथ	राह	मार्ग
शंकर	शिव	पशुपतिनाथ

ग. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द चुनिए–

1. (ii) 2. (iv) 3. (ii)
4. (iii) 5. (ii)

घ. अनुचित अनेकार्थी शब्द पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (iii) 2. (ii) 3. (iii)
4. (i) 5. (ii)

ङ. निम्नलिखित श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ के अनुसार वाक्य बनाइए–

1. अरि – पाकिस्तान भारत के लिए सदैव अरि रहेगा।
   अरी – रमेश की अरी बहुत खूबसूरत है।
2. अवधि – साहित्य में अवधि भाषा का बहुत महत्व है।
   अवधी – इस फिल्म की अवधी दो घंटा है।
3. अंक – मेरा पसंदीदा अंक पाँच है।
   अंग – चलती रेलगाड़ी में अंग बाहर नही निकालना चाहिए।
4. मनोरथ – अपना मनोरथ बताइए, आप क्या चाहते हैं?
   मनोरम – कशमीर का दृश्य बहुत ही मनोरम है।
5. वन – भारत देश का एक तिहाई हिस्सा वनों से ढका है।
   वन्य – हमें वन्य जीवों से प्रेम करना चाहिए।

च. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

जितेंद्रिय
त्रैमासिक
अवैतनिक
दुल्कर
चिरस्थायी
अभिमानी

7. उपसर्ग

(क) निम्नलिखित शब्दों के लिए उचित उपसर्ग चुनिए–

1. (ii) 2. (iii) 3. (iv)
4. (iii) 5. (i)

(ख) निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए–

अतिरिक्त, अत्याधिक	अपयश, अपमान
अधपका, अधजला	अनुचर, अनुराग
पराजय, पराक्रम	पुनर्जनम, पुनरूकत
दुराचार, दुर्लुभ	चिरकालीन, चिरस्थायी
चौराहा, चौपाई	कुचाल, कुचक्र

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग लगाकर नवीन शब्द बनाइए–

1. बहु + मूल्य = बहुमूल्य
2. ना + लायक = नालायक
3. कु + रूप = कुरूप
4. अ + न्याय = अन्याय
5. अप + यश = अपयश

8. प्रत्यय

क. जो शब्दांश धातु रूप या शब्द के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। हिंदी में प्रत्यय के निम्नलिखित दो भेद होते हैं–
कृत् प्रत्यय
तद्धित प्रत्यय

ख. निम्नलिखित शब्दों के लिए उचित प्रत्यय चुनिए–

1. (iii) 2. (ii) 3. (i)
4. (iii) 5. (iv)

ग. निम्नलिखित शब्दों में से 'मूल शब्द' और प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–

1. अभिनय + ता
2. अँध + एरा
3. आदर + नीय
4. भूल + अक्कड़
5. सुहा + आवना
6. बन + आवट

9. समास

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।
2. समास की प्रक्रिया द्वारा बनाए गए यौगिक शब्दों को समस्तपद या समासयुक्त शब्द कहते हैं। समासयुक्त शब्द का पहला पद पूर्व पद और दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है।
3. जब समस्तपद के सभी पद अलग-अलग किए जाते हैं, तो उसे समास-विग्रह कहते हैं। जैसे–

समस्तपद	***समास-विग्रह***
माता-पिता	माता और पिता
देशप्रेम	देश के प्रति प्रेम
जेबखर्च	जेब के लिए खर्च

4. समास के छह भेद होते हैं–अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व व बहुव्रीहि समास।
5.

कर्म तत्पुरुष समास	मरणासन्न	मरण को आसन्न
करण तत्पुरुष समास	रेखांकित	रेखा से अंकित
संप्रदान तत्पुरुष समास	हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी
अपादान तत्पुरुष समास	रोगमुक्त	रोग से मुक्त
संबंध तत्पुरुष समास	सेनापति	सेना का पति
अधिकरण तत्पुरुष समास	वनवास	वन में वास

ख. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. (iv) 2. (i) 3. (iv)
4. (i) 5. (iii)

ग. निम्नलिखित समस्तपदों में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए–

लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश जी	बहुव्रीहि समास
रात ही रात में	अव्ययीभाव समास
पीला है जो अंबर	कर्मधारय समास
गंगा का जल	संबंध तत्पुरुष समास
सब को प्रिय	कर्म तत्पुरुष समास
भाई और बहन	द्वंद्वं समास
ठीक समय पर	अव्ययीभाव समास
देश के लिए भक्ति	संप्रदान तत्पुरुष समास

घ. निम्नलिखित समास-विग्रहों से समस्तपद बनाइए–

वनवास	जन्मांध
हाथोंहाथ	महात्मा
आमरण	गंगाजल
त्रिभुज	यशप्राप्त
जेबखर्च	सत्याग्रह
गंगा–यमुना	नीलकंठ

10. संज्ञा

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. ❀ बंदर केला और अमरूद खा रहा है।
   ❀ कृष्ण और सुदामा गुरु के आश्रम में साथ-साथ पढ़ते थे।
   ❀ दिल्ली में कुतुबमीनार है।
   ❀ जीवन में सदा सच्चाई और ईमानदारी को अपनाना चाहिए।

   उपर्युक्त वाक्यों में सभी रंगीन पद नाम हैं। गुरु, बंदर, कृष्ण और सुदामा प्राणियों के नाम हैं। केला और अमरूद वस्तुओं के नाम हैं। दिल्ली, कुतुबमीनार और आश्रम स्थानों के नाम हैं। सच्चाई और ईमानदारी गुण/भाव/अवस्था के नाम हैं। ये सभी शब्द संज्ञा हैं। इस प्रकार, ''जिस शब्द के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं।''
2. संज्ञा के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–
   व्यक्तिवाचक संज्ञा
   जातिवाचक संज्ञा
   भाववाचक संज्ञा
3. **जातिवाचक संज्ञा –** जिन संज्ञा शब्दों से किसी वर्ग या जाति का बोध होता है, वे जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे–फूल, देश, पशु, मनुष्य, नदी, आदि शब्द पूरी जाति का बोध कराते हैं; अतः ये जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

   समूहवाचक संज्ञा – जो संज्ञा शब्द किसी समुदाय या समूह का बोध कराते हैं, वे समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे–सेना, झुंड, कक्षा, भीड़, परिवार, दरबार, गिरोह आदि।
4. **समूहवाचक संज्ञा –** जो संज्ञा शब्द किसी समुदाय या समूह का बोध कराते हैं, वे समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे–सेना, झुंड, कक्षा, भीड़, परिवार, दरबार, गिरोह आदि।

   द्रव्यवाचक संज्ञा – किसी पदार्थ या द्रव्य का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–स्टील, लकड़ी, सोना, पीतल, ताँबा, लोहा आदि।

ख. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. (iii) 2. (iii) 3. (i)
4. (ii) 5. (iii)

ग. निम्नलिखित शब्दों में से व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा शब्द अलग-अलग करके लिखिए–

व्यक्तिवाचक संज्ञा – सौरभ, रेखा, रामायण, चेन्नई, आगरा, शिमला।

जातिवाचक संज्ञा – चौड़ाई, गाय, शेर, सेना, जानवर, अध्यापक, ऊँचाई।

भाववाचक संज्ञा – बुढ़ापा, क्रोध, सहायता, मिठास, निराशा।

11. लिंग

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. शब्द के वे रूप, जो पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराते हैं, लिंग कहलाते हैं।लिंग के दो भेद होते हैं–पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।
2. पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द रूप पुल्लिंग कहलाते हैं।
   स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।
3. स्वयं करो।
4. 'अ' तथा 'आ' को 'ई' करने से –

पुल्लिंग	***स्त्रीलिंग***
नर	नारी
बेटा	बेटी
पुत्र	पुत्री

'अ' तथा 'आ' को 'इया' करने से –

पुल्लिंग	***स्त्रीलिंग***
बंदर	बँदरिया
खाट	खटिया
चूहा	चुहिया

शब्दों के अंत में 'आनी' जोड़ने से –

पुल्लिंग	***स्त्रीलिंग***
चौधरी	चौधरानी

क्षत्रियक्षत्राणी
नौकर नौकरानी

ख. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द लिखिए–

वृद्धा	घोड़ी	नारी
श्रीमती	लेखिका	नेत्री
पड़िताइन	गुड़िया	जेठानी
युवती	नौकरानी	बुढ़िया
वधू	नाइन	धाविका

ग. निम्नलिखित शब्दों के पुल्लिंग शब्द लिखिए–

बेटा	क्षत्रिय	शेर
खाट	नर तोता	साँप
साला	हाथी	तेरा
सेठ	सहायक	पिता
देवर	निर्माता	बच्चा

घ. स्वंय करो।

ङ. नीचे लिखे वाक्यों को लिंग परिवर्तन करके पुनः लिखिए–

1. अध्यापिका लड़के को पढ़ा रही है।
2. बादल देखकर मोरनी नाचने लगी।
3. सीमा बुद्धिमान लड़का है।
4. बच्ची पौधे को सींच रही है।
5. एक बंदरिया पेड़ पर बैठी है।

12. वचन

क. शब्द के एक या अनेक होने का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। वचन के दो भेद होते हैं–एकवचन तथा बहुवचन।

ख. निम्नलिखित शब्दों के उचित बहुवचन, विकल्पों में से चुनिए–

1. (iii) 2. (ii) 3. (iii)
4. (iii) 5. (iv)

ग. निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलिए–

पक्षियों	नायकों
धातुओं	तिथियाँ
लुएँ	छात्रों
मक्खियाँ	पत्तियाँ
लाठियाँ	अमीरों

घ. निम्नलिखित शब्दों के वचन बताइए–

एकवचन	बहुवचन
बहुवचन	बहुवचन
बहुवचन	बहुवचन
बहुवचन	बहुवचन
बहुवचन	एकवचन

13. कारक

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले चिह्न कारक कहलाते हैं।
2. **कर्म कारक –** शब्द के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म कारक का चिह्न 'को' है, जिसका प्रयोग कभी होता है और कभी नहीं होता; जैसे–

   ❀ सुरेश ने बंदर को केला दिया।

   संप्रदान कारक – संप्रदान का अर्थ है 'देना'। वाक्य में जिसे कुछ दिया जाए या जिससे कुछ लिया जाए, वे शब्द संप्रदान कारक में होते हैं। संप्रदान कारक के चिह्न 'के लिए' और 'को' हैं।

   ❀ डाक्टर ने रोगी को दवा दी।
3. **करण कारक –** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की सहायता से क्रिया संपन्न होती है, उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक के चिह्न 'से' और 'के द्वारा' हैं।

   ❀ आशा ने कैंची से कपड़ा काटा।

   अपादान कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने, निकलने, डरने, सीखने, लजाने या तुलना करने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक का चिह्न 'से' है। जैसे –

   गंगा हिमालय से निकलती है। (निकलना)
4. हिंदी में कारक निम्नलिखित आठ प्रकार के होते हैं–

1. कर्ता कारक	2. कर्म कारक
3. करण कारक	4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक	6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक	8. संबोधन कारक

कारक के उपर्युक्त आठों भेदों के लिए अलग-अलग चिह्न निर्धारित किए गए हैं। कारक और उनके चिह्न इस प्रकार हैं–

क्रम	कारक	विभक्ति-चिह्न
1.	कर्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से
4.	संप्रदान	को, के लिए
5.	अपादान	से (पृथकता)
6.	संबंध	का, के, की, रा, री, रे
7.	अधिकारण	में, पर
8.	संबोधन	हे, अरे, ओ

ख. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. (ii) 2. (iii) 3. (ii)
4. (iii) 5. (iii)

ग. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्दों के कारक बताइए–

1. कर्म कारक	2. संप्रदान कारक
3. करण कारक	4. कर्ता कारक
5. अधिकरण कारक	6. कर्ता कारक

14. सर्वनाम

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए–

   अशोक ने रवि से कहा, "मैं बाजार जा रहा हूँ। तुम मेरे साथ चलो।"

   इस वाक्य में मैं का प्रयोग अशोक ने अपने लिए किया है तथा तुम का प्रयोग रवि के लिए किया है।

   अशोक और रवि संज्ञा हैं। मैं और तुम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हुए हैं, अतः 'मैं' और 'तुम' सर्वनाम हैं। सभी सर्वनाम, नामों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार, "संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।"
2. सर्वनाम के छह भेद होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम	2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम और	6. निजवाचक सर्वनाम

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम –** जिन सर्वनाम शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना आदि का निश्चित बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–

   ❀ वह गाना गा रहा है।

   अनिश्चयवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित

पदार्थ या व्यक्ति का ज्ञान नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–

❀ शाायद कोई बाहर खड़ा है।

4. बोलने वाले, सुनने वाले तथा अन्य के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है; उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे–

❀ मैं अपना काम खुद करता हूँ।

❀ तुम्हारा नाम क्या है?

पुरुषवाचक सर्वनाम के **तीन** भेद हैं–

(क) उत्तम पुरुष – बोलने वाला या लिखने वाला अपने लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुष सर्वनाम कहा जाता है। जैसे–मैं, हम, मेरा, हमारा, हमें, मैंने, हमने, मुझे आदि।

(ख) मध्यम पुरुष – बोलने वाला जिस व्यक्ति को संबोधित करता है अथवा जिससे बातें करता है, उसके नाम के स्थान पर जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है उन्हें मध्यम पुरुष सर्वनाम कहा जाता है। जैसे–आप, तुम, तू, तेरा, तुम्हारा, आपको, तुमको, तुम्हें आदि।

(ग) अन्य पुरुष – जब बोलने वाला अपने सामने उपस्थित श्रोता से भिन्न किसी अन्य व्यक्ति के बारे में बातचीत करता है, तो उसके लिए वह जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं। जैसे–वह, यह, वे, ये, उसे, उनका, उन्हें आदि।

5. जिन सर्वनाम शब्दों से निजता या अपनेपन का बोध होता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

ख. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. (i) 2. (iv) 3. (iv)
4. (iii) 5. (ii)

ग. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम संबंधी अशुद्धियों को ठीक करके वाक्य दोबारा लिखिए–

1. देखो, वहाँ कोई खड़ा है।
2. कमरे में किसका सामान रखा है?
3. उसने काम पूरा कर लिया।
4. ये पढ़े-लिखे लोग नहीं हैं।
5. बाहर कौन आया है।

घ. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कर उनके सामने उनका प्रकार लिखिए–

1. मैं — पुरुषवाचक सर्वनाम
2. कोई — अनिश्चयवाचक सर्वनाम
3. यह — निश्चयवाचक सर्वनाम
4. मैं — संबंधवाचक सर्वनाम
5. जो, वो — संबंधवाचक सर्वनाम

15. विशेषण

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

2. **विशेष्य –** विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

प्रविशेषण – विशेषण शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।

3. **निश्चित संख्यावाचक विशेषण– वे** विशेषण शब्द, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

❀ कक्षा में पचास लड़के हैं।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण– वे विशेषण शब्द, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध नहीं कराते, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

❀ सभी बच्चे परीक्षा दे रहे हैं

4. विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

1. मूलावस्था 2. उत्तरावस्था 3. उत्तमावस्था

मूलावस्था– जब विशेषण के द्‌वारा कोई तुलना नहीं होती तो वह अपने मूल रूप में प्रयोग होता है। इसे विशेषण की मूलावस्था कहते हैं। जैसे–

❀ आसमान में सुंदर हंस उड़ रहे हैं।

उत्तरावस्था– जब विशेषण के द्‌वारा दो विशेष्यों की तुलना की जाती है तो विशेषण का रूप बदल जाता है। विशेषण के इस रूप को विशेषण की उत्तरावस्था कहते हैं। जैसे– वह तुमसे अधिक बलवान है।

❀ मेरा भाई मुझसे बड़ा है

उत्तमावस्था– विशेषण का वह रूप, जो विशेष्य को सबसे बढ़कर बताता है, विशेषण की उत्तमावस्था कहलाता है। जैसे–

❀ मोहन सबसे बलवान है

5. सर्वनाम ही सार्वनामिक विशेषण के रूप में भी कार्य करते हैं, अतः इनमें अंतर को समझना आवश्यक है। जब किसी सर्वनाम के बाद कोई संज्ञा प्रयुक्त हो, तो वह सर्वनाम वहाँ सार्वनामिक विशेषण बन जाता है। यदि सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हों, तो वे सर्वनाम ही कहलाते हैं।

ख. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. (iv) 2. (iii) 3. (iii)
4. (iv) 5. (iv)

ग. विशेषण बनाइए–

गर्विला, शर्मिला, चमकीला — राष्ट्रीय, आत्मीय, भारतीय
कल्पित, पुस्थित, घृणित — बली, धनी, दुखी

घ. निम्नलिखित शब्दों से बने उचित विशेषण को छाँटिए–

1. (i) 2. (iii) 3. (ii)
4. (iii) 5. (ii) 6. (ii)

16. क्रिया

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. खरगोश गाजर खा रहा है। गाय घास चर रही है।

बालक दौड़ रहा है। बालिका पुस्तक पढ़ रही है।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'खा रहा है', 'चर रही है', 'दौड़ रहा है' तथा 'पढ़ रही है' पदों से कुछ करने या होने का बोध हो रहा है। ये क्रिया शब्द हैं। 'क्रिया' शब्द का अर्थ है– 'करना'। इस प्रकार,

''जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।''

2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे–पढ़, खेल, जा, खा, देख, सुन, बैठ, गा आदि।

3. **सकर्मक क्रिया –** जिन क्रियाओं का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वे सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे–

❀ मोहन पुस्तक पढ़ता है।

अकर्मक क्रिया – जिन क्रियाओं का फल कर्ता पर पड़ता है, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे–

❀ कमला रोती है।

4. रचना के आधार पर क्रिया के चार भेद होते हैं–

1. संयुक्त क्रिया 2. नामधातु क्रिया
3. प्रेरणार्थक क्रिया 4. पूर्वकालिक क्रिया

5. **नामधातु क्रिया –** जिन क्रियाओं की रचना धातु से नहीं, वरन् संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण से होती है, उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं।

पूर्वकालिक क्रिया – किसी क्रिया से पूर्व यदि कोई अन्य क्रिया हो चुकी होती है, तो वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

ख. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. (iii) 2. (i) 3. (ii)
4. (iii) 5. (iii)

ग. वाक्य में प्रयुक्त क्रिया को रेखांकित करके उसके आगे एककर्मक अथवा द्विकर्मक लिखिए–

1.	पत्र	एककर्मक
2.	अंजली, हलवा	द्विकर्मक
3.	क्रिकेट	एककर्मक
4.	खेत, बीज	द्विकर्मक
5.	आम, पौधा	द्विकर्मक

घ. निम्नलिखित वाक्यों में से पूर्वकालिक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए–

1. सोकर 2. खाकर
3. चुराकर 4. पहुँचकर
5. भागकर 6. देखकर

17. काल

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने के समय का बोध होता है, उस समय को क्रिया का काल कहते हैं।
2. काल के तीन भेद होते हैं–भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल।
3. वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

(क) सामान्य वर्तमान काल

(ख) अपूर्ण वर्तमान काल

(ग) संदिग्ध वर्तमान काल

(क) सामान्य वर्तमान काल– क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल की क्रिया का सामान्य रूप में होना ज्ञात हो, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। उदाहरण–

❀ सीता पाठशाला पढ़ने जाती है।

(ख) अपूर्ण वर्तमान काल– क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य अभी चल रहा है किंतु समाप्त नहीं हुआ है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। उदाहरण–

❀ पारस गीत गा रहा है

(ग) संदिग्ध वर्तमान काल– क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल की क्रिया के होने में जहाँ संदेह पाया जाता है, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। उदाहरण–

❀ बावर्ची खाना बना रहा हा

4. भूतकाल के निम्नलिखित छह भेद होते हैं–

(क) सामान्य भूतकाल (ख) आसन्न भूतकाल
(ग) पूर्ण भूतकाल (घ) अपूर्ण भूतकाल
(ङ) संदिग्ध भूतकाल (च) हेतुहेतुमद् भूतकाल

5. **सामान्य भविष्यत् काल–** क्रिया का वह रूप, जिससे कार्य के भविष्य में होने का बोध हो, सामान्य भविष्यत् काल कहलाता है। उदाहरण–

❀ राम खेलने जाएगा।

संभाव्य भविष्यत् काल– क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के भविष्य में किए जाने की केवल संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं। उदाहरण–

❀ शायद चोर पकड़ा जाए।

ख. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया को रेखांकित करके उसके काल का नाम लिखिए–

1. संभाव्य भविषत् काल 2. सामान्य भविषत् काल
3. संदिग्ध वर्तमान काल 4. सामान्य भूतकाल
5. अपूर्ण भूतकाल 6. अपूर्ण भूतकाल

ग. निम्नलिखित वाक्यों का काल के अनुसार उचित मिलान कीजिए–

1. (v) 2. (vi) 3. (ii)
4. (i) 5. (viii) 6. (iii)
7. (vii) 8. (iv)

18. अव्यय या अविकारी शब्द

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. अविकारी शब्द वे होते हैं, जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण परिवर्तन नहीं होता। अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहते हैं। अव्यय के चार भेद होते हैं–

1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक

2. जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। क्रियाविशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं–

(क) कालवाचक क्रियाविशेषण– जो शब्द क्रिया के होने के समय का बोध कराते हैं, वे कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरण–

❀ वह दिनभर खेलता रहा।

(ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण– जो शब्द क्रिया के होने के स्थान का ज्ञान कराते हैं, वे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरण–

❀ माही बाहर खेल रही है।

(ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण– जो शब्द क्रिया के परिमाण का बोध कराते हैं, वे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरण–

❀ इस बार सरदी अधिक पड़ रही ह

(घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण– जो शब्द क्रिया के होने की रीति का बोध कराते हैं, वे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरण–

❀ कदाचित वह सच नहीं बोलेगा।

3. **संबंधबोधक –** जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। जैसे–

❀ गाय पेड़ की ओर देख रही है।

4. समुच्चयबोधक अव्यय के निम्नलिखित दो भेद होते है–

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक– जो अव्यय पद प्रधान वाक्यों अथवा एक ही स्थिति के दो शब्दों को जोड़ते हैं, वे समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। उदाहरण

❀ शेरशाह साहसी तथा बुद्धिमान शासक था।

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक– जो अव्यय पद एक प्रधान उपवाक्य को एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों से जोड़ते हैं, वे व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। उदाहरण–

❀ अभी से परीक्षा की तैयारी करो ताकि अच्छे अंक ला सका

5. **विस्मयादिबोधक –** जो शब्द हर्ष, प्रशंसा, घृणा, विस्मय, दुख आदि मनोभाव प्रकट करते हैं, वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं। जैसे–

❀ वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

ख. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों को पहचानकर लिखिए कि

वे संबंधबोधक है या क्रियाविशेषण–

1. संबंधबोधक 2. क्रियाविशेषण
3. क्रियाविशेषण 4. संबंधबोधक
5. क्रियाविशेषण

ग. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विस्मयादिबोधक अव्यय भरिए–

1. राम-राम जी 2. अरे
3. खबरदार 4. वाह
5. हाय 6. शाबास

घ. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में उचित समुच्चयबोधक शब्द भरिए–

1. (iii) 2. (i) 3. (iv)
4. (ii) 5. (iii)

19. वाक्य-विचार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. जिस पद या पद-समूह से पूरी बात समझ में आ जाए, उसे वाक्य कहते हैं। वाक्य के दो अंग होते हैं–1. उद्देश्य तथा 2. विधेय।
2. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–
   1. सरल 2. संयुक्त 3. मिश्रित वाक्य
3. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं–
   1. विधानवाचक वाक्य 2. निषेधवाचक वाक्य
   3. प्रश्नवाचक वाक्य 4. आज्ञावाचक वाक्य
   5. विस्मयादिबोधक वाक्य 6. संदेहवाचक वाक्य
   7. इच्छावाचक वाक्य 8. संकेतवाचक वाक्य
4. **प्रश्नवाचक वाक्य –** जिस वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाए, वह प्रश्नवाचक वाक्य कहलाता है; जैसे–
   ❀ क्या तुम्हें सरदी लग रही है?
   आज्ञावाचक वाक्य – जिस वाक्य से आज्ञा या उपदेश का बोध होता है, वह आज्ञावाचक वाक्य कहलाता है; जैसे–
   ❀ अपने कमरे में बैठ कर पढ़ो।
5. **मिश्रित वाक्य –** जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं; उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे-
   ❀ मालूम होता है कि आज आँधी आएगी।

ख. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय को अलग-अलग करके लिखिए–

	उद्देश्य	विधेय
1.	लंबी दाढ़ी वाला व्यक्ति	अचानक चीखने-चिल्लाने लगा।
2.	गाँव वाले चाचा-चाची	आए हैं।
3.	सड़क पर पड़ा बूढ़ा	कराह रहा था।
4.	अध्यापक	पाठ का सार समझा रहे थे।
5.	रमेश की बहन	घर जाने की जिद करने लगी।
6.	बूढ़ा व्यक्ति	चल नहीं पा रहा था।

ग. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर अर्थ के आधार पर दिए गए विकल्पों में से उचित वाक्य-भेद छाँटिए–

1. (ii) 2. (i) 3. (ii)
4. (iv) 5. (ii)

घ. रचना की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों के भेद लिखिए–

1. संयुक्त वाक्य 2. मिश्रित वाक्य
3. सरल वाक्य 4. संयुक्त वाक्य
5. संयुक्त वाक्य

20. विराम-चिह्न

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. लिखित भाषा में रुकने की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए जिन संकेत-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।
   उदाहरण–
   रोको मत, जाने दो।
   रोको, मत जाने दो।
2. **योजक चिह्न (-) –** दो शब्दों में परस्पर संबंध स्पष्ट करने हेतु उन्हें जोड़कर लिखने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
   ❀ मेरा तो मुंबई आना-जाना लगा रहता है।
   लाघव चिह्न (0) – किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे शून्य (0) या बिंदू (.) लगा देते है। जैसे–
   ❀ पंडित – पं0 (पं.) ❀ डॉक्टर – डॉ0 (डॉ.)
3. **अल्पविराम चिह्न (,) –** पढ़ते समय या बोलते समय जब अल्प समय के लिए रुकते हैं, तो इस रुकने को ही अल्पविराम कहते हैं। इसके लिए (,) चिह्न का प्रयोग करते हैं। जैसे–
   ❀ मैं, हरि, लता और सुमन सब मिलकर बाजार जाएँगे।
   अर्धविराम चिह्न (;) – जहाँ अल्पविराम से कुछ अधिक और पूर्णविराम से थोड़ा कम विराम लेना हो अथवा रुकना हो, वहाँ अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
   ❀ रेल के आने की घंटी बजी; प्लेटफार्म पर हलचल मचने लगी।
4. **विस्मयादिसूचक चिह्न (!) –** इसे संबोधन चिह्न भी कहते हैं। वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, घृणा, दुख, करुणा आदि भावों को प्रकट करने के लिए विस्मयादिसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
   ❀ वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।

ख. निम्नलिखित विराम-चिह्नों के सामने इनका चिह्न लिखते हुए एक-एक उदाहरण लिखिए–

	चिह्न	उदाहरण
1.	०	डॉ० अब्दुल कलाम
2.	–	माताजी ने कहा– ''ईश्वर तुम्हारी इच्छा जरूर पूरी करेगा।''
3.	;	रवि तो चला गया; अब मुझे भी जाने दो।
4.	'' ________ ''	आर्यभट्ट ने कहा था, ''पृथ्वी गोल है।''
5.	–	कक्षा में जीवन में सुख-दुख लगा रहता है।

21. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है– 'अभ्यास'। जब कोई शब्द-समूह या पद या वाक्यांश लगातार प्रयोग के कारण सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ व्यक्त करने लगे, तो वह मुहावरा कहलाता है। सामान्यतः प्रत्येक मुहावरा एक वाक्यांश होता है, पर प्रत्येक वाक्यांश मुहावरा नहीं होता। मुहावरा तो किसी अर्थ विशेष में रूढ़ हो जाता है। जैसे–'आँख का तारा'। इसका अर्थ है–बहुत प्यारा। इस प्रकार,
   जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, वह मुहावरा कहलाता है।
2. 'लोकोक्ति' शब्द दो शब्दों से बना है–'लोक + उक्ति' अर्थात् लोगों के द्वारा कही गई बात। अपने कथन की पुष्टि में, दूसरों को शिक्षा देने के उद्देश्य से या व्यंग्य करने के लिए लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। इनमें जीवन का विस्तृत अनुभव समाया होता है। इनके

प्रयोग से भाषा अधिक सुंदर, स्पष्ट तथा प्रभावपूर्ण हो जाती है। इस प्रकार, लोक द्वारा कही गई उक्ति लोकोक्ति कहलाती है।

3. मुहावरे वाक्यांश होते हैं। इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है। लोकोक्तियाँ स्वतंत्र वाक्य होती हैं।

4. मुहावरे व लोकोकितयों के प्रयोग से भाषा में सरसता, रोचकता, प्रवाह और चमत्कार आ जाता है। इनके प्रयोग से भाषा जीवंत तथा प्रभावशाली हो जाती है।

ख. निम्नलिखित मुहावरों के लिए उचित अर्थ वाले विकल्प को छाँटिए–

1. (ii) 2. (iii) 3. (ii)
4. (iii) 5. (iii)

ग. निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए–

1. एक ही उपाय से दो काम निकालना।
2. प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं।
3. किए हुए उपकार को भूल जाना चाहिए।
4. अपने कार्यों के अनुरूप सभी को फल मिलता है।
5. समय के पश्चात सहायता का कोई महत्त्व नही होता।
6. विपत्ति में और विपत्ति आ पड़ना।

घ. निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यो में प्रयोग कीजिए–

1. हमें कभी किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए।
2. आकाश ने सारे कष्ट स्वयं ले लिए, किंतु अपने मित्र पर आँच नही आने दी।
3. श्रीमती वर्मा रोज अपने बच्चे को मेरे गले मढ़ जाती है।
4. मुझे देखते ही उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी।
5. पुलिस को देखते ही लुटेरे हवा हो गए।

22. मौखिक रचना

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मौखिक रचना के निम्नलिखित रूप होते हैं–

1. काव्य-पाठ	2. भाषण
3. वार्तालाप एवं परिचर्चा	4. कहानी कहना
5. समाचार-पाठ	6. घटना-वर्णन
7. संवाद और अभिनय	8. कार्यक्रम संचालन

2. **काव्य-पाठ :** काव्य-पाठ को प्रभावशाली बनाने के लिए शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण का सदैव ध्यान रखना चाहिए। काव्य-पाठ इस प्रकार किया जाना चाहिए कि सुनने वाला केवल सुनकर उसके भाव को समझ ले। इसके साथ ही उचित लय, गति व आरोह-अवरोह के साथ कविता-पाठ किया जाना चाहिए।

   भाषण : आपने न जाने कितने व्यक्तियों को भाषण देते सुना होगा। कुछ वक्ता बहुत प्रभावशाली होते हैं, तो कुछ उबाऊ। भाषण देना भी एक कला है। इसे अभ्यास द्वारा सीखा जा सकता है। भाषण देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें–

   भाषण की तैयारी पहले से करनी चाहिए।

   ❀ अपने विचारों को तर्कपूर्ण और क्रमबद्ध रूप में व्यक्त करना चाहिए।
   ❀ परिवारजनों को श्रोता बनाकर भाषण का अभ्यास करना चाहिए।
   ❀ उतार-चढ़ाव, विराम-चिह्न व शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

3. मौखिक अभिव्यक्ति में दक्षता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं–

   ❀ भाषा की मौखिक अभिव्यक्ति में उच्चारण की शुद्धता होनी चाहिए।
   ❀ शुद्ध तथा मानक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
   ❀ वाक्य छोटे और सटीक होने चाहिए।
   ❀ भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
   ❀ निःसंकोच भाव से आत्मविश्वास के साथ बोलना चाहिए।

4. स्वयं करो।

23. अनुच्छेद लेखन	–	स्वयं करो।
24. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश	–	स्वयं करो।
25. कहानी लेखन	–	स्वयं करो।
26. पत्र लेखन	–	स्वयं करो।
27. निबंध लेखन	–	स्वयं करो।

व्याकरण कुसुम - 8

1. भाषा और व्याकरण

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों अथवा भावों का आदान-प्रदान कर सकता है। भाषा के मुख्यतः दो भेद होते हैं– मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा।

2. **लिपि –** अपने विचारों को बोलते समय हम ध्वनि-संकेतों का प्रयोग करते हैं तथा लिखते समय अक्षरों या वर्णों का प्रयोग करते हैं। लिखित भाषा में सार्थक ध्वनि के लिए कोई-न-कोई चिह्न (अक्षर अथवा वर्ण) अवश्य होता है। अक्षरों या वर्णों के चिह्नों को लिखने की विधि को ही लिपि कहते हैं। इस प्रकार, ''ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं।''

3. **बोली –** भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। यह छोटे क्षेत्र में बोला जाने वाला भाषा का स्थानीय रूप होता है। इस प्रकार बोली का क्षेत्र सीमित होता है जबकि भाषा का क्षेत्र व्यापक। हरियाणवी, राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली, कन्नौजी, छत्तीसगढ़ी आदि बोलियाँ क्षेत्र विशेष में ही बोली जाती हैं।

   बोली में प्रायः साहित्य-रचना नहीं होती, लेकिन कभी-कभी कोई बोली इतनी विकसित हो जाती है कि उसमें साहित्य-रचना और पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगता है। तब वह बोली एक भाषा का रूप ले लेती है। इसका सबसें अच्छा उदाहरण खड़ीबोली है, जिसकी गणना समृद्धतम भाषाओं में होती है। जिसे आज हम हिंदी भाषा के नाम से जानते हैं।

4. **मानक भाषा –** भाषा विशेष का प्रयोग विस्तृत भू-भाग में होता है। बहुत बड़े क्षेत्र में प्रयुक्त होने के कारण भाषा की उपभाषाओं तथा बोलियों का प्रभाव भाषा पर पड़ता है, जिससे भाषा में एकरूपता बनाए रखना कठिन हो जाता है। लेकिन भाषा में एकरूपता की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में शिक्षित जनों द्वारा प्रयुक्त व विद्वानों द्वारा स्वीकृत भाषा ही मानक भाषा कहलाती है।

5. ''व्याकरण वह शास्त्र है, जो भाषा के शुद्ध रूप व प्रयोग का ज्ञान कराता है।'' भाषा और व्याकरण का अटूट संबंध है। व्याकरण के ज्ञान के अभाव में भाषा का शुद्ध रूप में प्रयोग असंभव है। जो व्याकरण का ज्ञान रखता है, वही भाषा को शुद्ध रूप में प्रयोग कर सकता है।

6. **राष्ट्रभाषा –** वह भाषा, जिसका प्रयोग देश के अधिकांश निवासियों द्वारा किया जाता है, राष्ट्रभाषा कहलाती है। भारत में हिंदी का प्रयोग लगभग 70 प्रतिशत निवासियों द्वारा किसी-न-किसी रूप में किया जाता है; अतः हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है।

   राजभाषा – वह भाषा, जिसका प्रयोग देश के सरकारी कार्यालयों में

काम-काज के लिए किया जाता है, राजभाषा कहलाती है। राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा में अंतर है, इसे एक न समझें। भारत में कार्यालयी काम-काज के लिए हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाता है।

ख. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1.	(iii)	2.	(ii)	3.	(ii)
4.	(iii)	5.	(ii)	6.	(iv)

ग. निम्नलिखित भाषाओं के सामने इनकी लिपियाँ लिखिए –

रोमन	रोमन
ब्राद्मी	बांग्ला
फारसी	देवनागरी
गुरुमुखी	देवनागरी
देवनागरी	देवनागरी

घ. असमिया, हिंदी, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, नेपाली, पंजाबी, बांग्ला, मलयालम, सिंधी, बोडो, मैथिली, मणिपुरी, संथाली, संस्कृत, मराठी।

2. वर्ण–विचार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. ''मुख से निकली वह छोटी से छोटी ध्वनि, जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।'' वर्णों के खंड नहीं किए जा सकते हैं, इसलिए इन्हें अक्षर भी कहा जाता है।
2. **ह्रस्व स्वर –** जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं– अ, इ, उ, तथा ऋ।

   दीर्घ स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय (दो मात्रा का समय) लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। ये संख्या में सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।
3. उच्चारण के आधार पर हिंदी वर्णमाला में व्यंजनों के तीन भेद हैं– स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन।
4. **संयुक्त व्यंजन –** जब दो या दो से अधिक स्वर रहित व्यंजन आपस में मिलकर एक नया व्यंजन बनाते हैं, तब वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं–

   क् + ष = क्ष   ज् + ञ = ज्ञ

   त् + र = त्र   श् + र = श्र

   द्वित्व व्यंजन – जब एक स्वर रहित व्यंजन का समान स्वर सहित व्यंजन से मेल होता है, तब वह द्वित्व व्यंजन कहलाता है; जैसे–क्क – मक्का, त्त – पत्ता, ल्ल – दिल्ली आदि।
5. स्वंय करें।
6. **अल्पप्राण व्यंजन–** अल्पप्राण व्यंजन वे व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण करते समय मुख से वायु की मात्रा कम तथा कमजोर होकर निकलती है। अल्पप्राण व्यंजन इस प्रकार हैं–

   क् ग् ङ्   च् ज् ञ्   ट् ड् ण्   त् द् न्   प् ब् म्   य् र ल् व्

   महाप्राण व्यंजन– महाप्राण व्यंजन वे व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण करते समय मुख से वायु की मात्रा अधिक वेग से निकलती है। महाप्राण व्यंजन इस प्रकार हैं–

   ख् घ्   छ् झ्   ठ् ढ्   थ् ध्   फ् भ्   श् ष् स् ह्

ख. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1.	(i)	2.	(i)	3.	(i)
4.	(ii)	5.	(iii)	6.	(iii)

ग. निम्नलिखित वर्णों में बताइए कि ये अनुस्वार तथा अनुनासिक में से कौन-से हैं –

अनुनासिक	अनुनासिक
अनुस्वार	अनुस्वार
अनुस्वार	अनुनासिक
अनुनासिक	अनुस्वार
अनुनासिक	अनुनासिक

घ. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) चिह्न लगाइए –

1.	✓	2.	✓	3.	✓
4.	✓	5.	✗	6.	✓

3. उच्चारण और वर्तनी

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मुख के द्वारा वर्णों अथवा स्वरों को बोलना उच्चारण कहलाता है।
2. हिंदी भाषा में शुद्ध उच्चारण को विशेष महत्त्व दिया गया है।
3. यदि वर्णों का उच्चारण उचित ढंग से न किया जाए, तो भाषा अशुद्ध हो जाती है। हिंदी भाषा में शुद्ध उच्चारण को विशेष महत्त्व दिया गया है; क्योंकि इसमें वर्णों, शब्दों आदि को जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है; अन्य भाषाओं की तरह लिखित व मौखिक रूप में कोई अंतर नहीं होता। उच्चारण पर क्षेत्रीय प्रभाव तथा व्याकरण की उचित जानकारी न होने आदि कई कारणों से, भाषा में उच्चारण एवं लेखन संबंधी अशुद्धियाँ दिखाई देती हैं।

ख. उच्चारण संबंधी अशुद्धियों के उदाहरणों में से शुद्ध रूप (✓) लगाइए –

1.	(ii)	2.	(iii)	3.	(i)
4.	(ii)	5.	(i)	6.	(iii)
7.	(i)				

ग. निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों के लिए शब्द लिखिए –

अभिषेक	आवश्यकता
विकास	आगामी
सेना	हानि
पशु	दयालु
पत्नी	बुद्धि

4. संधि

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. **संधि –** ''दो ध्वनियों के पास-पास होने के कारण उनके आपसी मेल से उत्पन्न विकार संधि कहलाता है।''

   संधि-विच्छेद – संधि किए हुए वर्णों को अलग करके पहले वाली स्थिति में लाना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे–

   मतानुसार = मत + अनुसार   गणेश = गण + ईश

   परोपकार = पर + उपकार   मतैक्य = मत + ऐक्य
2. संधि के तीन भेद होते हैं–स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।
3. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि और अयादि संधि।
4. **विसर्ग संधि –** विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो परिवर्तन होता है, वह विसर्ग संधि कहलाता है; जैसे–

   मनः + रथ = मनोरथ

   दुः + जन = दुर्जन

   अयादि संधि– यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई असमान स्वर आए तो इनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाता है; जैसे–

   ए + अ = अय → शे + अन = शयन

   ऐ + अ = आय → नै + अक = नायक

5. **विसर्ग का स् में परिवर्तन–** विसर्ग के बाद यदि त् अथवा स् हो तो विसर्ग का स् हो जाता है; जैसे–

दुः + साहस = दुस्साहस

निः + संतान = निस्संतान

विसर्ग का ष् में परिवर्तन– यदि विसर्ग से पहले र अथवा उ हो तथा उसके बाद क्, ख्, ट्, ठ्, प्, फ् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष् हो जाता है; जैसे–

निः + पाप = निष्पाप

निः + काम = निष्काम

6. ❀ यदि किसी शब्द के अंत में 'त्' आया हो और उसके बाद 'च' या 'छ' आया हो, तो 'त्', 'च्' में बदल जाता है; जैसे–

उत् + चारण = उच्चारण

तत् + छाया = तच्छाया

❀ यदि 'त्' के बाद 'ज' और 'ल' आए हों तो 'त्' क्रमशः 'ज' और 'ल' में बदल जाता है; जैसे–

उत् + ज्वल = उज्ज्वल

उत् + लास = उल्लास

❀ यदि 'स्' से पहले 'त्' का प्रयोग हो तो वह ज्यों का त्यों रहता है; जैसे–

सत् + संबंध = सत्संबंध

सत् + साहस = सत्साहस

ख. निम्नलिखित संधि-विच्छेदों के लिए उचित संधि चुनिए –

1. (i) 2. (iv) 3. (i)
4. (ii) 5. (iii) 6. (ii)
7. (iii)

ग. निम्नलिखित शब्दों में संधि विच्छेद कीजिए –

स्वयं करो

घ. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए –

योगेंद्र	वध्वागमन्
उल्लास	लधूर्मि
उतलास	समयाभाव
संचय	नारीश्वर
मनोरथ	नौका
हास्यपराध	भावुक
तथैव	गिरीश

5. शब्द-विचार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. वर्णों का ऐसा समूह, जिसका कोई अर्थ हो, शब्द कहलाता है। हम सभी अपने दैनिक जीवन में अनेक भावों को बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करते हैं। बोलते समय हमारे मुख से कुछ ध्वनियाँ निकलती हैं, जिनके माध्यम से हम अपनी बात दूसरे व्यक्ति को समझा पाते हैं; जैसे–

क् + अ + म् + अ + ल् + अ

ज् + अ + ल् + अ + ज् + अ

म् + इ + ठ् + आ + ई

क् + अ + म् + अ + र् + आ

उपर्युक्त उदाहरणों में अनेक ध्वनियाँ हैं। इन ध्वनियों के मेल से जो सार्थक इकाई बनती है, उसके द्वारा ही वक्ता अपनी बात श्रोता को समझा पाता है; जैसे–कमल, जलज, मिठाई, कमरा।

2. शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित चार आधारों पर किया जाता है–

रचना के आधार पर स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर

अर्थ के आधार पर प्रयोग के आधार पर

3. रचना के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित तीन भेद किए जाते हैं–

(क) रूढ़ शब्द (ख) यौगिक शब्द (ग) योगरूढ़ शब्द

4. **तत्सम शब्द–** संस्कृत भाषा के वे शब्द, जो अपने मूल रूप में ही हिंदी भाषा में प्रयुक्त किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते है; जैसे–सूर्य, स्नेह, अग्नि, वायु आदि।

तद्भव शब्द– हिंदी भाषा में प्रयुक्त किए जाने वाले वे शब्द, जो संस्कृत भाषा के शब्दों से विकृत होकर अथवा रूप परिवर्तित होकर बने हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–खेत, गाय, आम आदि। ये सभी शब्द क्रमशः संस्कृत शब्दों क्षेत्र, गौ, आम्र से बने हैं।

5. अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित छह भेद होते हैं–

(क) पर्यायवाची शब्द (ख) विलोम शब्द

(ग) एकार्थक शब्द (घ) अनेकार्थक शब्द

(ङ) श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द (च) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

6. क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

ख. निम्नलिखित शब्दों के लिए दिए गए वर्गों में से उचित विकल्प छाँटिए –

1. (ii) 2. (iii) 3. (i)
4. (ii) 5. (iii) 6. (i)
7. (iii)

ग. निम्नलिखित विदेशी शब्दों की उचित भाषा चुनिए –

1. (ii) 2. (i) 3. (iii)
4. (iv) 5. (ii) 6. (iv)
7. (iii)

घ. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखिए –

स्वयं करो।

6. शब्द भंडार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. भाषा-प्रयोग की कुशलता प्राप्त करने के लिए विविध प्रकार के शब्दों का ज्ञान अति आवश्यक है। जो भाषा जितनी समृद्ध और व्यापक होती है, उसमें उतने ही अधिक शब्द व्यवहार में आते हैं। किसी भाषा में जितने शब्द व्यवहार में आते हैं, उन सबके समुच्चय को उस भाषा का शब्द-भंडार कहते हैं।

2. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। यद्यपि हिंदी-भाषा में प्रयुक्त होने वाले समस्त शब्द संदर्भानुसार अपना स्वतंत्र अर्थ रखते हैं तथा पूरी तरह से कोई शब्द दूसरे शब्द का पर्याय नहीं होता, फिर भी कुछ समानताओं के आधार पर इन्हें पर्यायवाची मान लिया गया है।

अग्नि – आग, अनल, पावक, दहन, ज्वाला।

अपमान – निरादर, तिरस्कार, उपेक्षा, अवहेलना, बेइज्जती।

3. वह उपयुक्त संक्षिप्त शब्द, जो वाक्यांश अथवा अनेक सम्बद्ध शब्दों के लिए शीर्षक का कार्य करता है, वाक्यांश के लिए एक शब्द कहलाता है। वाक्यांश के लिए एक शब्द का व्यवहार उत्कृष्ट भाषा का प्रमाण माना जाता है।

4. ऐसे शब्द, जो सुनने में समान हों परंतु अर्थ की दृष्टि से भिन्न हों, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। इनकी पहचान उचित उच्चारण, वर्तनी एवं प्रयोग से होती है।

अंश भाग

अंस कंधा

अकथजो कहा न जा सके

अथकबिना थके

5. हिंदी भाषा में कुछ शब्द ऐसे हैं, जो एकार्थक अर्थात एक जैसे अर्थ देने वाले प्रतीत होते हैं, परंतु वास्तव में उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं; जैसे–अस्त्र और शस्त्र–दोनों शब्द अर्थ की दृष्टि से एक-से प्रतीत होते हैं, परंतु दोनों में सूक्ष्म अंतर है–

अस्त्र–हाथ से फेंककर चलाया जाने वाला हथियार।

शस्त्र–हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार।

ख. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. (iii) 2. (iii) 3. (iv)
4. (ii) 5. (i) 6. (iii)

ग. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए –

1. सुधा पीयूष सोमरस
2. गजानन विनायक लंबोदर
3. कुदरत संसार
4. फूल कुसुम सुमन
5. अंबा जननी माँ
6. पशुपतिनाथ भोलेनाथ शंकर

घ. निम्नलिखित शब्दों के सही विलोम शब्द, विकल्पों में से छाँटिए –

1. (iii) 2. (iii) 3. (i)
4. (i) 5. (ii) 6. (iii)
7. (ii)

ङ. निम्नलिखित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों से इस प्रकार वाक्य बनाइए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए –

1. यह भवन मेरे पिताजी ने बहुत मेहनत से बनवाया है।
   भुवन में हमें सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए।
2. हमें अपने पास शस्त्र नहीं रखने चाहिए।
   गीता हिंदु धर्म का सर्वश्रेष्ठ शास्त्र है।
3. चीनी का परिमाण सही से ज्ञात कीजिए।
   हमें परिणाम की चिंता किए बिना कठिन परिश्रम करना चाहिए।
4. परिवार का वातावरण सदैव अभय रहना चाहिए।
   उभय मंदिर एक समान सुंदर है।
5. तुमने यहाँ आकर मेरा कार्य आसान कर दिया है।
   इस भवन का आकार बहुत विशाल है।
6. यह कटक दुश्मनों को नाको चने चबवा देगा।
   मेरे पैर में कंटक लग गया है।

7. उपसर्ग

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. वे शब्दांश, जो शब्दों से पहले लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन उत्पन्न कर देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
2. हिंदी भाषा के उपसर्गों को पाँच वर्गों में बाँटा गया है–संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू-फारसी के उपसर्ग, संस्कृत के अव्यय और अंग्रेजी के उपसर्ग।
3. शब्दों का निर्माण निम्न प्रकार से किया जा सकता है –
   उपसर्ग द्वारा प्रत्यय द्वारा
   समास द्वारा संधि द्वारा
4. स्वयं करो।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर उचित विकल्प चुनिए –

1. (ii) 2. (i) 3. (ii)
4. (iii) 5. (ii) 6. (iv)

ग. निम्नलिखित उपसर्गों से तीन-तीन शब्द बनाइए –

गैरहाजिर गैरसरकारी गैर कानूनी
बदनाम बदमाश बदबू
अधोगति अधोपतन अधोमुख
अधिनायक अधिपति अधिकांश
सब-कमेटी सब-जज सब-इंस्पेकटर
वाइस-कैप्टन वाइस-प्रेसिडेंट वाइस-चीफ मिनिस्टर

घ. निम्नलिखित उपसर्गों को छाँटकर अलग-अलग वर्गों में लिखिए –

हिंदी के उपसर्ग – चौ, पर, अध, उन्

संस्कृत के उपसर्ग – अति, अन, अभि, औ

संस्कृत के अव्यय – उप, पुनः, कु, निस्, सम्, स्वयं

उर्दू-फारसी के उपसर्ग – खुश, बद, गैर

8. प्रत्यय

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. प्रत्यय वे शब्द हैं, जो किसी शब्द के अंत में जुड़ते हैं।
2. हिंदी में प्रत्यय के निम्नलिखित दो भेद होते हैं–
   क. कृत प्रत्यय – जो प्रत्यय धातु के अंत में लगते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। जिस शब्द के अंत में कृत प्रत्यय लगा होता है, उसे कृदंत कहा जाता है; जैसे–
   लड़ + आई = लड़ाई
   हँस + ई = हँसी
   भूल + अक्कड़ = भुलक्कड़
   ख. तद्धित प्रत्यय – जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय आदि शब्दो के अंत में जुड़कर नए शब्दों की रचना करते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे–
   सफल + ता = सफलता
   बल + वान = बलवान
   नगर + इक = नागरिक
3. धातुओं के अंत में लगकर नया शब्द बनाने वाले प्रत्यय कृत प्रत्यय कहलाते हैं।
   संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय आदि के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
4. हिंदी भाषा में निम्नलिखित तीन प्रकार के प्रत्यय होते हैं–
   क. संस्कृत के प्रत्यय
   ख. हिंदी के प्रत्यय
   ग. अरबी-फारसी के प्रत्यय

ख. निम्नलिखित शब्दों के लिए उचित प्रत्यय चुनिए –

1. (i) 2. (ii) 3. (iii)
4. (iv) 5. (iii) 6. (ii)

ग. निम्नलिखित प्रत्ययों से तीन-तीन शब्द बनाइए –

थकावट बनावट लिखावट
खटोला मंझोला सँपोला
चुगलखोर धूसखोर हरामखोर
खतरनाक खौफनाक दर्दनाक
चालबाज दगाबाज पतंगबाज
पंडिताइन चौधराइन ललाइन
नायिका बालिका सेविका
विशेषतया सामान्यतया साधारणतया
दर्शनीय पूजनीय विचारणीय

घ. निम्नलिखित शब्दों में लगे प्रत्यय पहचानकर मूलशब्द और प्रत्यय अलग-अलग लिखिए –

कठिन तम
कर तव्य

पूज	अनीय
चाल	अक
दर्द	नाक
चमचा	गिरी
कलम	दान
चिकन	आहट
टिक	आऊ
चौधरी	आइन

9. समास

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'समास' शब्द 'सम्' और 'आस' के संयोग से बना है। 'सम्' का अर्थ है 'पास' और 'आस' का अर्थ है 'बैठाना'। समास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दो संबद्ध शब्दों को पास-पास लाकर उनका संक्षिप्त रूप बनाया जाता है; जैसे–

देवो के लिए आलय	=	देवालय
घोड़े पर सवार	=	घुड़सवार

2. समास मुख्य रूप से छह प्रकार के होते हैं–अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व तथा बहुव्रीहि समास
3. समासयुक्त पदों को अलग करने की प्रक्रिया समास-विग्रह कहलाती है
4. **तत्पुरुष समास –** जिस समास में पूर्वपद विशेषण का कार्य करता है और उत्तरपद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे–सिरदर्द (सिर का दर्द), रसोईघर (रसोई के लिए घर) आदि।
तत्पुरुष समास के भेद – कारक की दृष्टि से तत्पुरुष समास के निम्नलिखित छह भेद होते हैं–

कर्म तत्पुरुष	करण तत्पुरुष
सप्रदान तत्पुरुष	अपादान तत्पुरुष
संबंध तत्पुरुष	अधिकरण तत्पुरुष

5. कर्मधारय समास के दोनों पदों में उपमेय-उपमान अथवा विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास के दोनों पद अप्रधान होते हुए किसी तीसरे अथवा विशेष अर्थ की ओर संकेत करते हैं; जैसे–

कर्मधारय समास

समस्तपद — नीलांबर
समास-विग्रह — नीले हैं जो वस्त्र

बहुव्रीहि समास

समस्तपद — नीलांबर
समास-विग्रह — नीले है वस्त्र जिसके अर्थात बलराम जी

ख. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर उचित विकल्प चुनिए –

1. (ii)	2. (i)	3. (iii)
4. (iii)	5. (iii)	6. (i)

ग. निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम भी लिखिए –

युद्ध के लिए भूमि	संप्रदान तत्पुरुष समास
ग्राम के वासी	तत्पुरुष समास
चार भुजाओं का समूह	द्विगु समास
जेब को काटने वाला	तत्पुरुष समास
देवों के लिए आलय	द्वंद्व समास
पीले है वस्त्र जिसके अर्थात श्री कृष्ण	बहुव्रीहि समास
एक है दाँत जिसका अर्थात गणेश जी	बहुव्रीहि समास
सिर में दर्द	अधिकरण तत्पुरुष समास

घ. निम्नलिखित समासों के दो-दो उदाहरण लिखिए –

गगनचुंबी	वनगमन
हस्तलिखित	रोगमुक्त
महाराजा	नीलगाय
पिता-पुत्र	माता-पुत्री
पेटदर्द	लोकप्रिय
राज्यसभा	ग्रामसभा
रातोरात	यथाशक्ति

10. संज्ञा

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. राजीव सर्कस देखने गया। वहाँ उसने शेर, चीता, बंदर आदि देखे। शेर की बहादुरी, चीते की वीरता व बंदरों की चालाकी से वह बहुत प्रभावित हुआ।
उपर्युक्त वाक्यों में

राजीव, शेर, चीता, बंदर	प्राणियों के नाम
सर्कस	स्थान का नाम
बहादुरी, वीरता, चालाकी	भाव के नाम

ये सभी शब्द संज्ञा है क्योंकि इनसे प्राणियों, स्थानों तथा भावों का बोध हो रहा है।

2. संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा।
3. यदि व्यक्तिवाचक संज्ञा एक से अधिक का बोध कराती है, तो वह व्यक्तिवाचक संज्ञा भी जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग होती है; जैसे–

- कुछ **विभीषणों** की वजह से ही देश पर शत्रु हमला करते हैं।
- हमारे देश में हर युग में **सीताओं** ने जन्म लिया है।

4. वे संज्ञा शब्द, जो किसी समूह अथवा समुदाय का बोध कराते हैं, समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं। वे संज्ञा शब्द, जो किसी द्रव्य पदार्थ अथवा धातु का बोध कराते हैं, द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं।
5. कुछ संज्ञाएँ तो मूल रूप से भाववाचक होती हैं, लेकिन कुछ भाववाचक संज्ञाओं की रचना की जाती है। भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण पाँच प्रकार के शब्दों से किया जा सकता है–जातिवाचक संज्ञाओं से, विशेषणों से, सर्वनाम से, क्रियाओं से तथा अव्यय से।

जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

चोर — चोरी
गुरु — गुरुता

विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

मीठा — मिठास
विस्तृत — विस्तार

सर्वनाम से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

पराया — परायापन
सर्व — सर्वस्व

क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

हारना — हार
खाँसना — खाँसी

अव्यय से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

दूर — दूरी
निकट — निकटता

ख. निम्नलिखित शब्दों से बनी उचित भाववाचक संज्ञा छाँटिए –

1. (iv)	2. (i)	3. (iv)
4. (ii)	5. (i)	6. (iv)

ग. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए –

बुनाई	यौवन	क्षत्रियत्व
मिलाप	बचपन	चुनाव
युवा	नरत्व	उड़ान
गरमी	भक्ति	निजता
विद्‌वता	मिठाई	चौड़ाई

11. लिंग

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. शब्द का वह रूप, जिससे उसके पुरुष अथवा स्त्री जाति का होने का बोध होता है, लिंग कहलाता है।
2. शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति के होने का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
3. **नित्य पुल्लिंग शब्द –** कुछ शब्द सदैव पुल्लिंग होते हैं, इसलिए इन्हें नित्य पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–तोता, कौवा, खटमल, पक्षी, उल्लू, कीड़ा, भेड़िया, चीता, पशु, मच्छर, गीदड़, बिच्छू आदि।

   नित्य स्त्रीलिंग शब्द – कुछ शब्द सदैव स्त्रीलिंग होते हैं, इसलिए इन्हें नित्य स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–कोयल, मक्खी, भेड़, मकड़ी, गिलहरी, मछली, छिपकली, चील, तितली, मैना आदि।
4. संज्ञा में विकार तीन प्रकार से आता है–लिंग, वचन व कारक द्‌वारा।

ख. निम्नलिखित प्रत्ययों से बनी उचित स्त्रीलिंग संज्ञा छाँटिए –

1. (ii)	2. (i)	3. (i)
4. (iv)	5. (ii)	

ग. निम्नलिखित स्त्रीलिंग शब्दों से पुल्लिंग शब्द बनाइए –

सुनार	नर
पाठक	कवि
ठाकुर	विधुर
ब्राह्मण	धनवान
अध्यापक	जाट
बलवान	स्वामी

घ. निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग शब्द बनाइए –

रानी	मोरनी
वधु	ऊँटनी
साम्राज्ञी	देवी
सास	अध्यक्ष
श्रीमती	कहारिन
अभिमानिनी	मेहतरानी

12. वचन

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।
2. वचन के दो भेद होते हैं–एकवचन और बहुवचन।

   वे संज्ञा शब्द, जिनसे एक वस्तु, व्यक्ति अथवा पदार्थ का बोध होता है, एकवचन कहलाते हैं।

   वे संज्ञा शब्द, जिनसे एक से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा पदार्थों का बोध होता है, बहुवचन कहलाते हैं।
3. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए।

   शेर दहाड़ रहा था।

   शेर दहाड़ रहे थे।

   बंदर पेड़ पर लटक रहा था।

   बंदर पेड़ पर लटक रहे थे।

   अध्यापक पढ़ा रहा था।

   अध्यापक पढ़ा रहे थे।

   उपर्युक्त वाक्यों में 'शेर', 'बंदर' तथा 'अध्यापक' से इनके वचन का पता नहीं चल रहा है। इन वाक्यों में वचन की पहचान क्रिया के रूप से हो रही है। 'दहाड़ रहा था', 'लटक रहा था' तथा 'पढ़ा रहा था' एकवचन की क्रियाएँ हैं जबकि 'दहाड़ रहे थे', 'लटक रहे थे' तथा 'पढ़ा रहे थे' बहुवचन की क्रियाएँ हैं। अतः वचन की पहचान क्रिया के रूप द्‌वारा भी हो जाती है।
4. सदैव बहुवचन रहने वाले शब्द

   बाल – हमें अपने बाल रोज धोने चाहिए।

   समाचार – आज का ताजा समाचार बताइए।

   लोग – कल मेले में दो हजार से ज्यादा लोग इकट्‌ठा हुए थे।

   होश – मनोज पाँच दिन से अस्पताल में है, उसे आज होश आया है।

   आँसू – मैं उसकी आँखो से एक भी आँसू बहते हुए देखना नहीं चाहता हूँ।
5. एकवचन शब्दों से बहुवचन शब्द बनाने के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं–

   आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंत में आए आ को ए में परिवर्तित करके

एकवचन	**बहुवचन**
गधा	गधे
घोड़ा	घोड़े

   अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में आए अ को एँ में परिवर्तित करके

एकवचन	**बहुवचन**
सड़क	सड़कें
दीवार	दीवारें

   आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में एँ जोड़कर

एकवचन	**बहुवचन**
कथा	कथाएँ
सभा	सभाएँ

   शब्द के अंत में आए इया को इयाँ में परिवर्तित करके

एकवचन	**बहुवचन**
गुड़िया	गुड़ियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ

ख. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के उचित बहुवचन रूप चुनिए –

1. (iii)	2. (iii)	3. (iv)
4. (iii)	5. (iii)	6. (iii)

ग. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए –

अमीर	धेनू	लड़कियाँ
डिब्बी	जूँ	रातें
बातें	मजदूर	खिड़कियाँ
गधे	चिड़ियाँ	कला
आप लोग	बालक वर्ग	प्रजा

घ. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों के वचन बताइए –

स्वयं करो।

13. कारक

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।
2. कारक के आठ भेद होते हैं–कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक,

संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक तथा संबोधन कारक।

3. संबोधन कारक का वाक्य की क्रिया से कोई संबंध नहीं होता।

4. **करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर**

इन दोनों कारकों में परसर्ग 'से' है, फिर भी दोनों में अंतर है; जैसे–

पारस साइकिल से स्कूल गया। (करण कारक)

अनुज छत से गिर पड़ा। (अपादान कारक)

दोनों वाक्यों में 'से' परसर्ग का प्रयोग किया गया है, परंतु पहले वाक्य में 'साइकिल' पारस के स्कूल पहुँचने का साधन है; जबकि दूसरे वाक्य में 'छत' अनुज के वहाँ से अलग होने का बोध करा रहा है। अतः पहले वाक्य में करण कारक है और दूसरे वाक्य में अपादान कारक है।

5. **कर्म कारक तथा संप्रदान कारक मे अंतर**

दोनों कारकों में 'को' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है, परंतु दोनों में अंतर है; जैसे–

शिक्षक छात्र को पाठ पढ़ाते हैं। (कर्म कारक)

शिक्षक छात्र को पठन-सामग्री देते हैं। (संप्रदान कारक)

दोनों वाक्यों में 'को' परसर्ग का प्रयोग हुआ है, परंतु दोनों में अंतर है, क्योंकि पहले वाक्य में शिक्षक द्वारा की गई क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ रहा है। यहाँ 'छात्र' पढ़ाना क्रिया का कर्म है, अतः उसके साथ 'को' परसर्ग लगा है; परंतु दूसरे वाक्य में 'छात्र' को पठन-सामग्री देने का भाव है। यहाँ पठन-सामग्री देने की क्रिया 'छात्र' के लिए की गई है। अतः यहाँ 'छात्र' संप्रदान कारक है।

ख. निम्नलिखित वाक्यों के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प छाँटिए –

1. (ii) 2. (ii) 3. (iii)
4. (iii) 5. (ii)

ग. नीचे दिए गए प्रत्येक कारक का एक-एक उदाहरण लिखिए –

स्वयं करो।

14. सर्वनाम

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. वाक्य में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

2. सर्वनाम के छह भेद होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम	2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम	6. निजवाचक सर्वनाम

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम –** जो सर्वनाम शब्द किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करे, वह निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे–

- ❀ यह मेरी साइकिल है।
- ❀ इसी बच्चे ने रेस जीती है।
- ❀ वह मोहन का भाई है।
- ❀ ये मेरे भाई हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'यह', 'इसी', 'वह' और 'ये' निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम – जो सर्वनाम शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना का निश्चित बोध न कराए, वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे–

- ❀ आप से मिलने कोई आया है।
- ❀ बाल्टी में थोड़ा पानी है।
- ❀ कुछ लड़के आज नहीं आए हैं।
- ❀ किसी ने मेरे बारे में नहीं पूछा।

उपर्युक्त वाक्यों में 'कोई', 'थोड़ा', 'कुछ' और 'किसी' अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. **प्रश्नवाचक सर्वनाम –** किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि के संबंध में प्रश्न का बोध कराने वाले सर्वनाम शब्द, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

- ❀ छत पर कौन बैठा है?

5. पुरुषवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

उत्तम पुरुष– बात कहने वाला अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुष कहते हैं; जैसे–मैं, हमें, मुझे, हम आदि।

मध्यम पुरुष– बात सुनने वाले के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं; जैसे–तुम, आप, तू, तुम्हें आदि।

अन्य पुरुष– जिसके बारे में बात हो रही है, उसके लिए प्रयोग होने वाले सर्वनामों को अन्य पुरुष कहते हैं; जैसे–वह, वे, उसे, उन्होंने आदि।

ख 1. (iii) 2. (ii) 3. (ii)
4. (iii) 5. (ii) 6. (iii)

ग. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्द छाँटिए और उनके भेद भी लिखिए –

1.	कुछ	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
2.	उसे	पुरुषवाचक सर्वनाम
3.	स्वयं	निजवाचक सर्वनाम
4.	ये सभी	निश्चयवाचक सर्वनाम
5.	जो, वह	संबंधवाचक सर्वनाम
6.	किसके	प्रश्नवाचक सर्वनाम

15. विशेषण

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता का बोध कराते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण चार प्रकार के होते हैं–गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक तथा सार्वनामिक विशेषण।

2. **गुणवाचक विशेषण –** वे शब्द, जो किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-दोष आदि का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- ❀ यह लाल गुलाब है।
- ❀ गांधी जी एक महान व्यक्ति थे।
- ❀ शिवाजी एक वीर योद्धा थे।
- ❀ यह इमारत ऊँची है।

इन वाक्यों में 'लाल', 'महान', 'वीर' और 'ऊँची' शब्द गुणवाचक विशेषण हैं, जो क्रमशः 'गुलाब', 'व्यक्ति', 'योद्धा' और 'इमारत' की विशेषता बता रहे हैं।

3. संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे–दो अनार, चार पुस्तकें, सौ रुपए आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–कुछ लोग, थोड़ा दूध, बहुत-सारे छात्र आदि।

4. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं तथा जो सर्वनाम संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

❀ वह पानी पी रही है। (सर्वनाम)
❀ वह लड़की पानी पी रही है। (सार्वनामिक विशेषण)

5. **विशेषणों की अवस्थाएँ –** दो विशेष्यों की विशेषता की तुलना करने के लिए विशेषण का जो रूप प्रयोग किया जाता है; उसे विशेषण की अवस्था कहते हैं। विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

1.मूलावस्था 2.उत्तरावस्था 3.उत्तमावस्था

मूलावस्था – यह विशेषण का मूल रूप होता है। इसमें किसी प्राणी या वस्तु के गुण-दोष या विशेषता का कथन मात्र होता है। इसमें तुलना का भाव नहीं होता है। इसमें विशेष्य की सामान्य विशेषता ही प्रकट की जाती है; जैसे–

❀ लिंडा सुंदर अभिनेत्री है।

उत्तरावस्था – जब दो प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों की तुलना करते हैं, तो एक को दूसरे से अच्छा या बुरा बताते हैं। विशेषण के इस रूप से दो विशेष्यों की विशेषताओं की तुलना की जाती है; जैसे–

❀ चीता शेर से तेज दौड़ता है

उत्तमावस्था – जब किसी प्राणी, वस्तु या स्थान को सबसे अच्छा या सबसे बुरा बताया जाता है तो वह उत्तमावस्था कहलाती है। विशेषण का यह रूप एक विशेष्य को अन्य सभी की तुलना में सबसे बढ़कर बताता है; जैसे–

❀ सचिन तेंदुलकर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी है।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटिए –

1. (i) 2. (iii) 3. (i)
4. (ii) 5. (ii) 6. (ii)

ग. निम्नलिखित विशेषणों की उत्तरावस्था और उत्तमावस्था लिखिए –

मधुरतर	मधुरतम
लधुतर	लधुतम
त्तीवतर	तीवतम

घ. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विशेषणों को छाँटकर लिखिए और उनके भेद भी लिखिए –

1.	सफेद	गुणवाचक
2.	यह	सार्वनामिक
3.	काला	गुणवाचक
4.	चालीस	निश्चित संख्यावाचक
5.	चार लीटर	निश्चित परिमाणवाचक
6.	अनेक	अनिश्चित परिमाणवाचक
7.	महान	गुणवाचक विशेषय

16. क्रिया

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. जिस शब्द या पद से किसी कार्य का होना या करना प्रकट होता है या किसी व्यक्ति या वस्तु की स्थिति का पता चलता है, उसे क्रिया कहते हैं।उदाहरण -

❀ आशीष पुस्तक पढ़ रहा है।
❀ लड़कियाँ खेल रही हैं।

2. **धातु –** क्रिया का वह अंश, जो क्रिया के विभिन्न रूपों में समान रूप से पाया जाता है, धातु कहलाता है। जैसे–लिखना, लिखता, लिखते, लिखेगा, लिखूँगा, लिखेंगे, लिखों, लिखें, लिखूँ आदि सभी में 'लिख' अंश समान रूप से विदयमान है; अतः 'लिख' धातु है। इसी प्रकार पठ्, खेल, हँस, देख आदि धातु के उदाहरण हैं।

3. सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते हैं–

एककर्मक क्रिया– जिन क्रियाओं के साथ एक कर्म पाया जाता है, वे एककर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे–

❀ शीला अखबार पढ़ रही है।
❀ श्याम फूल तोड़ रहा है।

द्विकर्मक क्रिया– जिन क्रियाओं में दो कर्म पाए जाते हैं, वे द्विकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे–

❀ अध्यापक ने छात्रों को पाठ पढाया।
❀ हर्ष ने रवि को पुस्तक दी।

4. रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं–सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया और पूर्वकालिक क्रिया।

5. **संयुक्त क्रिया –** दो या दो से अधिक धातुओं के योग से बनी क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे–

❀ प्रेरणा घरेलू काम कर रही है।
❀ उसने पुस्तक पढ़ ली होगी।

नामधातु क्रिया – कुछ क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं; जैसे–

शब्द	**नामधातु क्रिया**
फिल्म (संज्ञा)	फिल्माना
लज्जा (संज्ञा)	लजाना

6. **पूर्वकालिक क्रिया–** जिस क्रिया का पूरा होना वाक्य की मुख्य क्रिया के पूरे होने से पूर्व पाया जाए, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। धातु में 'कर' लगाने से पूर्वकालिक क्रियाओं की रचना होती है; जैसे–

❀ माँ थैला लेकर बाजार गई।
❀ रोहित पढ़कर सो गया।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटिए –

1. (iii) 2. (iii) 3. (i)
4. (ii) 5. (ii) 6. (iii)

ग. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं को पहचानकर उनका भेद लिखिए –

नहाकर	पूर्वकालिक क्रिया
खेल रहा है।	अकर्मक क्रिया
पढ़ाया	एककर्मक क्रिया
सुनाई	द्विकर्मक क्रिया
नहलाती है।	प्रेरणार्थक क्रिया
मँगवाया	प्रेरणार्थक क्रिया

17. काल और वाच्य

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. क्रिया के करने या होने के समय को काल कहते हैं।
2. काल के तीन भेद होते हैं–भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल।
3. वर्तमान काल के तीन भेद हैं–सामान्य वर्तमान, अपूर्ण वर्तमान तथा संदिग्ध वर्तमान।

भविष्यत् काल के दो भेद हैं–सामान्य भविष्यत् काल तथा संभाव्य भविष्यत् काल।

4. क्रिया का वह रूप जिससे यह ज्ञात हो कि उसके लिंग तथा वचन का प्रयोग कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार किया गया है, वाच्य कहलाता है।
5. वाच्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

   1. **कर्तृवाच्य –** जहाँ क्रिया का प्रयोग वाक्य में कर्ता के लिंग व वचन के अनुसार किया जाता है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है। जैसे –

❀ अमर गीत गाता है।
❀ पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

2. **कर्मवाच्य –** जहाँ क्रिया का प्रयोग वाक्य में कर्म के लिंग व वचन के अनुसार किया जाता है, वहाँ कर्मवाच्य होता है। जैसे–
❀ प्रभा के द्‌वारा नृत्य किया जाता है।
❀ उसके द्‌वारा पत्र लिखा जाता है।

3. **भाववाच्य –** जहाँ क्रिया का प्रयोग वाक्य में कर्ता अथवा कर्म के लिंग व वचन के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होता है, वहाँ भाववाच्य होता है। जैसे–
❀ मुझसे चला नहीं जाता।
❀ अवनीश से सोया नहीं जाता।

6. **संभाव्य भविष्यत् काल–** जिस काल के वाक्यों में क्रिया के भविष्य में होने की संभावना प्रकट की जाती है किंतु क्रिया के संपन्न होने का निश्चय नहीं रहता, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे–
❀ शायद हमारा परिवार पिकनिक पर जाएगा।
❀ शायद आज शाम को पिता जी जल्दी घर आएँ।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटिए –

1. (iii) 2. (i) 3. (iii)
4. (iii) 5. (iv)

ग. निम्नलिखित वाक्यों का उचित वाच्य भेद दिए गए विकल्पों में से चुनिए –

1. (i) 2. (i) 3. (iii)
4. (iii) 5. (iii) 6. (ii)

घ. कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार क्रियाओं के काल बदलकर वाक्य दोबारा लिखिए –

1. बस सदियों के निशान लिए हुई है।
2. तुम्हारे जाने का कोई असर नहीं पड़ेगा।
3. स्थिति अगर ऐसी थी, तो वास्तव में चिंता का विषय थी।
4. वास्तव में सलमान किसी हीरो से कम नहीं होगा।

18. अविकारी शब्द

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. वे शब्द, जिन पर लिंग, वचन, कारक अथवा काल आदि का प्रभाव नहीं पड़ता है, अविकारी अथवा अव्यय शब्द कहलाते हैं।
अव्यय के पाँच भेद होते हैं– क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात।
2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
क्रियाविशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं–
❀ कालवाचक क्रियाविशेषण
❀ स्थानवाचक क्रियाविशेषण
❀ रीतिवाचक क्रियाविशेषण
❀ परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
3. **क्रियाविशेषण एवं विशेषण में अंतर**
विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं तथा क्रियाविशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं। एक ही शब्द को क्रियाविशेषण और विशेषण दोनों रूपों में प्रयोग किया जा सकता है; जैसे–
❀ प्रियंका चोपड़ा सुंदर अभिनेत्री है।
❀ अभिषेक बच्चन सुंदर नाचते हैं।
पहले वाक्य में 'सुंदर' विशेषण है, क्योंकि वह 'प्रियंका चोपड़ा' (संज्ञा) की विशेषता बता रहा है। दूसरे वाक्य में 'सुंदर' क्रियाविशेषण है, क्योंकि वह 'नाचना' (क्रिया) की विशेषता बता रहा है।
4. जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद लगकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बताते हैं, वे संबंधबोधक कहलाते हैं।
5. समुच्चयबोधक अव्यय के निम्नलिखित दो भेद होते हैं–
समानाधिकरण समुच्चयबोधक – जो समुच्चयबोधक समान स्तर वाले शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहा जाता है। जैसे–
❀ राम और श्याम सगे भाई हैं।
❀ मैं दुकान पर गया और घर का सामान लाया।
व्यधिकरण समुच्चयबोधक – जो समुच्चयबोधक प्रधान तथा आश्रित उपवाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहा जाता है। जैसे–
❀ ऐसा प्रतीत होता है मानो वर्षा आएगी।
❀ वह प्रथम आया क्योंकि उसने मन लगाकर पढ़ाई की थी।
6. ऐसे अव्यय, जो किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ पर विशेष बल देते हैं, निपात कहलाते हैं।

ख. उपयुक्त क्रियाविशेषण शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. (i) 2. (iii) 3. (iii)
4. (iv) 5. (iii)

ग. उचित संबंधबोधक शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. (ii) 2. (iv) 3. (ii)
4. (iii) 5. (ii)

घ. निम्नलिखित वाक्यों में से समुच्चबोधक अव्यय छाँटकर लिखिए –

1. इसलिए 2. क्योंकि 3. तो
4. अतः 5. ताकि

19. वाक्य विचार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. ऐसे अव्यय, जो किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ पर विशेष बल देते हैं, निपात कहलाते हैं।
वाक्य के निम्नलिखित दो अंग होते हैं–
1. उद्‌देश्य 2. विधेय
2. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं–
1. विधानवाचक 2. निषेधवाचक
3. प्रश्नवाचक 4. आज्ञावाचक
5. संदेहवाचक 6. संकेतवाचक
7. इच्छावाचक 8. विस्मयादिबोधक
3. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–
1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य
4. **संयुक्त वाक्य –** जिस वाक्य में एक से अधिक साधारण वाक्य समुच्चयबोधक शब्दों से जुड़े रहते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं; जैसे–
❀ वह आया था और अपना काम करके चला गया।
मिश्र वाक्य – जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं; जैसे–
❀ उसने मुझे बताया कि कल स्कूल बंद रहेगा।
5. वह वाक्यांश, जिसमें एक से अधिक पद परस्पर संबद्ध होकर एक इकाई के रूप में कार्य करते हैं, पदबंध कहलाता है; जैसे–
❀ वह शेर के समान बलवान है।

❀ हम झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बहुत आदर करते हैं।

ख. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य तथा विधेय को अलग-अलग लिखिए –

1.	परिश्रमी	सदा सफल होते हैं।
2.	रमेश	देख और सुन रहा है।
3.	धनी व्यक्ति	प्रत्येक वस्तु खरीद सकता है।
4.	बच्चों ने	आज मैच खेला।
5.	सुनीता	खाना खाकर सो गई।
6.	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	बहुत साहसी थीं।

ग. रचना की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों के भेद लिखिए –

1. मिश्र वाक्य 2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य 4. सरल वाक्य
5. संयुक्त वाक्य

घ. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों के भेद लिखिए –

1. आज्ञावाचक वाक्य 2. संकेतवाचक वाक्य
3. इच्छावाचक वाक्य 4. विस्मयादिबोधक वाक्य
5. निषेधवाचक वाक्य 6. संदेहवाचक वाक्य
7. विधानवाचक वाक्य

20. विराम–चिह्न

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. विराम का शाब्दिक अर्थ होता है–विश्राम अथवा रुकना।
भाषा में स्पष्टता तथा सौंदर्य लाने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
2. **योजक-चिह्न –** योजक चिह्न (-) का प्रयोग शब्द-युग्मों के मध्य में, अक्षरों में लिखी जाने वाली संख्याओं तथा तुलनात्मक स्थिति में किया जाता है; जैसे–
रात-दिन, सुख-दुख, माता-पिता, दाल-रोटी।
एक-तिहाई, तीन-चौथाई।
निर्देशक-चिह्न – इस चिह्न (–) का प्रयोग किसी उदाहरण की ओर संकेत करने अथवा निर्देश देने वाले वाक्यों के बाद होता है; जैसे–
❀ रमेश बोला–"माँ, मैंने अपना कार्य पहले से ही कर लिया है।"
❀ हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं–गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती।
3. **विस्मयादिसूचक-चिह्न –** शोक, हर्ष, विस्मय, भय अथवा आश्चर्य आदि भावों को व्यक्त करने के लिए विस्मयादिसूचक-चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है; जैसे–
❀ अरे! यह सब कैसे हो गया।
❀ उफ! आज तो बहुत गरमी है।
4. **लाघव-चिह्न –** किसी शब्द को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए लाघव-चिह्न (0) का प्रयोग किया जाता है; जैसे–
❀ कृपया पन्ना उलटिए–कृ0प030
❀ डॉक्टर–डॉ0
5. **अल्पविराम-चिह्न –** पढ़ते अथवा बोलते समय जहाँ बहुत कम समय के लिए रुका जाता है, वहाँ अल्पविराम-चिह्न (,) का प्रयोग किया जाता है; जैसे–
❀ रीना, मीना, ऊषा और रागिनी आपस में सहेलियाँ हैं।
❀ वह बालक वीर, साहसी और पढ़ने में होशियार है।
अर्धविराम-चिह्न – वाक्यों में जब पूर्णविराम से कम तथा अल्पविराम से अधिक समय के लिए रुकना पड़ता है, तब उसके लिए अर्धविराम चिह्न (;) का प्रयोग किया जाता है; जैसे–
❀ चलना ही जीवन है; रुकना मृत्यु।
❀ सूर्य उदय होगा; कमल खिलेगा; और उसमें बंद भौंरा उड़ जाएगा।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों में विराम-चिह्नों के सही विकल्प चुनिए –

1. (ii) 2. (ii) 3. (i)
4. (i) 5. (ii) 6. (ii)

ग. स्वयं करो।

21. अलंकार

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. अलंकार का अर्थ है–'गहना या आभूषण'। जिस प्रकार गहने या आभूषण स्त्री के सौंदर्य को बढ़ाने में सहायक होते हैं। उसी प्रकार अलंकार भी काव्य के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। इनके प्रयोग से काव्य रोचक, सरस और हृदयग्राही हो जाता है। इस प्रकार,
2. काव्य की शोभा के आधार पर अलंकार के दो भेद किए जा सकते हैं–शब्दालंकार तथा अर्थालंकार।
3. काव्य में शब्दों के द्वारा जहाँ चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।
शब्दालंकार के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–अनुप्रास, यमक तथा श्लेष।
4. अर्थालंकार के मुख्यतः चार भेद होते हैं–उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा अतिशयोक्ति।
5. **यमक अलंकार –** जब काव्य में किसी एक शब्द का एक से अधिक बार भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग हो, तब वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे–
❀ "काली घटा का घमंड घटा।"
यहाँ 'घटा' शब्द का प्रयोग दो बार हुआ हैं और दोनों बार उसका अर्थ अलग है। पहले 'घटा' का अर्थ 'बादल' है तथा दूसरे 'घटा' का अर्थ 'कम होना' है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।
श्लेष अलंकार – काव्य में जब कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो और उसके दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हों, तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है। जैसे–
"मंगन को देखि पट देत बार-बार है।"
इस पंक्ति में 'पट' शब्द के दो अर्थ हैं–वस्त्र तथा किवाड़। अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

ख. निम्नलिखित पंक्तियों में आए अलंकारों के नाम लिखिए –
स्वयं करो।

ग. निम्नलिखित अलंकारो के दो-दो उदाहरण लिखिए –
स्वयं करो।

22. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हिंदी भाषा में ऐसी शब्द-योजना को मुहावरा कहते हैं, जो अपने मूल शब्द के प्रत्यक्ष अर्थ को छोड़कर किसी अन्य विशेष अर्थ को बताती है। **जैसे–**भारत ने युद्ध में पाकिस्तान के दाँत खट्टे कर दिए। इस वाक्य में दाँत खट्टे करने का तात्पर्य यह नहीं है कि भारत द्वारा पाकिस्तानी सैनिकों को कोई खट्टी वस्तु खिलाई गई थी जिससे कि उनके दाँत खट्टे हो गए। यहाँ इसका विशेष अर्थ बुरी तरह पराजित करने से समझना चाहिए।
2. लोकोक्ति का तात्पर्य होता है–लोक में प्रचलित उक्ति अथवा कथन। लोकोक्तियाँ जनसाधारण के अनुभवों, किसी घटना, कहानी अथवा तथ्य पर आधारित होती हैं। इनका प्रयोग किसी विचार के समर्थन में किया जाता है, जिससे कथन प्रभावशाली हो जाता है। ये प्रायः स्वतंत्र वाक्यों की भाँति प्रयोग की जाती हैं।
3. मुहावरे वाक्यांश होते हैं, इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।
लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं और ये वाक्य के अंत में स्वतंत्र रूप में

आती हैं।

4. मुहावरे को वाक्यांश इसलिए कहते है क्योकि मुहावरों का प्रयोग पूर्ण वाक्य की तरह नहीं किया जा सकता है।

ख. निम्नलिखित मुहावरों के सही अर्थ चुनिए –

1. (i)	2. (ii)	3. (iv)
4. (ii)	5. (iv)	6. (ii)

ग. निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

1. अचानक मनचाही वस्तु मिल जाना।
   वह तो बिना परिश्रम के ही अमीर बन गया। इसे कहते हैं अंधे के हाथ बटेर लगना।
2. कोई सिद्धांत न होना
   रितेश की तो बात ही निराली है। वह तो गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास वाली नीति रखता है।
3. आपसी फूट का परिणाम भयानक होता है।
   कुछ देशद्रोही भारतीय आतंकवादियों की मदद करते है, इसे कहते है घर का भेदी लंका ढाए।
4. मूर्खो में कम बुद्धि वाला भी समझदार माना जाता है।
   पराग ही अपने गाँव में थोडा पढ़ा-लिखा है। इसलिए वह अपने आप को अंधो में काना राजा मानता है।
5. खाने की वस्तु का आवश्यकता से बहुत कम होना
   मोहित आठ रोटियाँ खाता है और तुम उसे मात्र दो ही रोटियाँ दे रहे हो। यह तो ऊँट के मुँह में जीरे वाली बात हो गई।

23. मौखिक रचना – स्वयं करो।

24. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश – स्वयं करो।

25. संवाद–लेखन – स्वयं करो।

26. पत्र–लेखन – स्वयं करो।

27. अनुच्छेद–लेखन – स्वयं करो।

28. निबंध लेखन – स्वयं करो।